अध्याय 2

अदन के बगीचा में मनुष्य और स्त्री की रचना

दिन 7: परमेश्वर ने अपने कार्य से विश्राम किया (2:1-3)

1यों आकाश और पृथ्वी और उनकी सारी सेना का बनाना समाप्त हो गया। 2और परमेश्वर ने अपना काम जिसे वह करता था सातवें दिन समाप्त किया। और उसने अपने किए हुए सारे काम से सातवें दिन विश्राम किया। 3और परमेश्वर ने सातवें दिन को आशीष दी और पवित्र ठहराया; क्योंकि उस में उसने अपनी सृष्टि की रचना के सारे काम से विश्राम लिया।

उत्पत्ति 2:1-3 का 1:31 से अलग होने का कोई ठोस कारण नहीं दिखता है क्योंकि सृष्टि का वर्णन 2:3 तक जारी रहता है। इस भाग को पहले अध्याय में, जब छठे दिन के पश्चात् कि परमेश्वर ने अपनी प्रारंभिक सृष्टि समाप्त कर ली है, रखना चाहिए था।

आयत 1. NASB कहता है: **आकाश और पृथ्वी और उनकी सारी सेना को सृजने का काम समाप्त हुआ**, यह इब्रानी मूल पाठ का शाब्दिक अनुवाद है। यद्यपि, इसके बजाय, "उनकी सारी सेना" NIV इसको इस प्रकार अनुवाद करता है, "उनकी सारी विशाल श्रेणी/श्रृंखला समूह।" इस आयत के अनुवाद की विभिन्नता यह दर्शाती है कि "आसमान," के "सेना" केवल सूर्य, चाँद और सितारों को ही इंगित नहीं करता है बल्कि मनुष्य और "पृथ्वी" की सारे प्राणी, जैसे वे उनकी श्रेणी में क्रमानुसार, जैसे अध्याय 1 में इसका विवरण किया गया है, सम्मिलित किए गए हैं।

इस तथ्य को सुनिश्चित करना कि इस आयत का ठीक अर्थ क्या है अत्यंत कठीन है क्योंकि "hosts" צְבָאָם *(सेबाअम)* "सेना" शब्द पुराने नियम में विभिन्न प्रकार से प्रयोग किया गया है। मुख्यतः यह सुसंगठित, अनुशासित समूह को इसके पद या कंपनी के साथ प्रदर्शित करता है। यह एक सेना को भी संबोधित करता है जो दल बांध कर अपने शत्रु के सामने खड़ी है (21:22; न्यायियों 4:2) या यह "स्वर्ग की सेना" है जो परमेश्वर की स्वर्गदूतों की सेना की मंडली है (1 राजा 22:19)। जब परमेश्वर इस्राएल के लिए लड़ा तो उसने स्वर्ग की सेना को इसके लिए उपयोग किया और जब यहोशु के सम्मुख तलवार खींचे स्वर्गदूत प्रकट हुआ तो उसने अपनी पहचान "यहोवा की सेना" के कप्तान के रूप में कराई

(צְבָא-יְהוָה, *सेबा याहवेह;* यहोशु 5:14)।

"सेना" का प्रयोग आकाशीय पिण्ड के लिए भी किया गया है जिनकी आराधना मध्य पूर्व के लोग ईश्वर के रूप में भी किया करते थे (व्यव. 4:19; 17:3; 2 राजा 17:16; 21:3)। चाहे हो या न हो 2:1 का वक्तव्य में मनुष्य शामिल है, लेकिन यह स्पष्ट है कि लेखक इस बात को नहीं कहता कि स्वर्ग की सेना ईश्वर है और उनकी आराधना की जानी चाहिए। वे परमेश्वर की सृष्टि के भाग हैं और उनको परमेश्वर की आज्ञानुसार आकाश में अपना कार्य करना है।

आयत 2. मूल पाठ कहता है कि **परमेश्वर ने अपना काम जिसे वह करता था सातवें दिन समाप्त किया**। इस आयत का विश्लेषण कुछ इस प्रकार किया जाता है कि परमेश्वर ने अपना कार्य सातवें दिन भी जारी रखा और तब उसी दिन ही उसने वह कार्य समाप्त किया और फिर विश्राम किया। इस प्रकार का विश्लेषण इस संदर्भ से मेल नहीं खाता है क्योंकि पहली अध्याय के अंत में ही, परमेश्वर ने कायनात और उसकी सारे चीजों की रचना कर ली थी। तत्पश्चात जब परमेश्वर ने अपनी सृष्टि को देखा तो उसने कहा, "बहुत अच्छा है।" जैसे ही छठा दिन समाप्त हुआ, तो किसी को यह नहीं अपेक्षा करनी चाहिए कि "कुछ और रचना शेष है परंतु प्रजनन और स्व स्थायीकरण,"[1] सृष्टिकर्ता के डिज़ाइन के अनुसार जो उसने कायनात तथा सभी प्राणियों के लिए निर्धारित की है ही अब शेष है।

उत्पत्ति 2:2 कहता है, "परमेश्वर ने अपना काम जिसे वह करता था पूरा किया," NIV क्रिया *kalah* (כָּלָה, *कालाह)* को पूर्ण काल के रूप में प्रयोग करता है: "परमेश्वर ने अपना काम जिसे वह कर रहा था पूरा किया।" लेखक ने उत्पत्ति 2:1 में पहले ही कह दिया था कि परमेश्वर ने स्वर्ग और पृथ्वी बनाने का कार्य पूरा कर लिया था। निश्चय ही परमेश्वर यह कहकर अपना विरोध नहीं कर सकता था कि सातवें दिन तक उसने अपना कार्य जारी रखा जैसे कि RSV और NRSV ने इसको कुछ इस प्रकार अनुवाद किया है, "और सातवें दिन परमेश्वर ने अपना कार्य पूरा किया।" पँचग्रन्थ में अन्य स्थानों में जहाँ इस क्रिया का प्रयोग हुआ है (17:22; 49:33; निर्गमन 40:33), वहाँ इस क्रिया का प्रयोग उस कार्य के लिए हुआ जो पूरा हो चुका है और कुछ अंग्रेजी अनुवादों में इसके लिए पूर्ण काल का प्रयोग पाया जाता है।[2]

और परमेश्वर **अपने किए हुए सारे काम से सातवें दिन विश्राम किया।** "विश्राम किया" का तात्पर्य यह नहीं है कि परमेश्वर थक चुका था जैसे कि मनुष्यों के साथ छः दिन कार्य करने के पश्चात होता है; बल्कि इसका तात्पर्य यह है कि परमेश्वर अपने सृष्टि के कार्य से सातवें दिन रुक गया। उत्पत्ति 2:2, 3 में विश्राम के लिए जो इब्रानी शब्द *shabath* (שָׁבַת, *सब्त)* प्रयोग हुआ है और इसका संज्ञा रूप *shabbath* (שַׁבָּת, *सब्त)* है, जिसका अंग्रेजी समानांतर "sabbath" "सब्त" अंग्रेजी बाइबल में प्रयोग किया गया है। इब्रानी लेखक इस्राएलियों को यह स्मरण दिलाना चाहता है कि जिस प्रकार परमेश्वर ने अपने सृष्टि के कार्य से सातवें दिन विश्राम किया था उसी प्रकार उन्हें भी अपने परिश्रम से सातवें दिन विश्राम करना चाहिए। सब्त की महत्वता को देखते हुए दस आज्ञा

में भी परमेश्वर का विश्राम करने को महत्व दिया गया हैः "क्योंकि छः दिन में यहोवा ने आकाश, और पृथ्वी, और समुद्र, और जो कुछ उन में है, सब को बनाया, और सातवें दिन विश्राम किया; इस कारण यहोवा ने विश्रामदिन को आशीष दी और उसको पवित्र ठहराया" (निर्गमन 20:11)।

कई विद्वानों ने इस्राएलियों के "सातवें दिन" के पालन का रीति रिवाज़ की तुलना प्राचीन मेसोपोटामिया के रीति रिवाज़ से करने का प्रयास किया है। बाबुल के लोग - महीने के पन्द्रहवें दिन को पूर्णमासी का दिन - करके सम्बोधित करते थे और वे इसको अच्छा शगुन मानते थे। यद्यपि, अकाडियन *šab/pattu*, *सबपत्तु* और इब्रानी *सब्त*, में समानता तो पाई जाती है, परंतु *šab/pattu*, *सबपत्तु* सातवें दिन नहीं आया बल्कि महीने के मध्य संभवतः पंद्रहवें दिन आया। सत्य तो यह है कि बाबुल के लोग महीने के सातवाँ, चौदहवाँ, उन्नीसवाँ, इक्कीसवाँ और अट्ठाईसवाँ दिन बुरा मानते थे न कि इस्राएलियों के समान पवित्र दिन।[3]

इससे बढ़कर चंद्र कैलेन्डर के $29^1/_2$ दिन में सात दिन के हफ्ते को ठीक से बैठाना संभव नहीं है क्योंकि जो महीना चंद्रमा की कलाओं पर आधारित है उसमें महीने को सात दिन के हफ्ते में विभाजित करना संभव नहीं है। मेसोपोटामिया के अलावा कई और ऐसे स्थान भी है जहाँ पर सातवें दिन को मनाने की प्रथा प्रचलित थी। यद्यपि इनमें से कोई भी ऐसे विचार इस बात का प्रमाण नहीं है कि सब्त के दिन की प्रथा परमेश्वर का अपने सृष्टि के कार्य से विश्राम करने से जुड़ा है।

आयत 3. सब्त की विशेषता इस वक्तव्य से जुड़ा है कि **परमेश्वर ने सातवें दिन को आशीष दी और पवित्र ठहराया**। परमेश्वर ने जो कुछ छः दिन में बनाया था उसको उसने "बहुत अच्छा" कहा (1:31), परंतु केवल सब्त के दिन को ही उसने "पवित्र" ठहराया ("पवित्र बनाया"; NIV)। शब्द जैसे קָדַשׁ *(कादाश)* जो यहाँ प्रयोग किया गया है उसका संबंध पवित्रता से है। यह सामान्य या घृणित से अलग और प्रतिष्ठित किया गया है।[4]

सब्त को परमेश्वर के सृष्टि के सामर्थी कार्य के पूर्ण करने के स्मरणार्थ मनाया जाता है। यह इस्राएल के लोगों के लिए बहुत महत्वपूर्ण है जिन्होंने अपने मिस्र के दास प्रथा के ज़िन्दगी में अपने दैनिक कार्य से कभी भी विश्राम नहीं पाया था। परंतु, परमेश्वर ने उनको उनके दास प्रथा के ज़िन्दगी से छुटकारा दिलाया। अब वे विश्राम कर सकते हैं, तरोताज़ा हो सकते हैं और परमेश्वर की आराधना परमेश्वर के नए लोग के समान उसकी आराधना कर सकते हैं जिनको उसने पुत्र होने की उपाधि दी है (निर्गमन 4:22, 23)। मूसा ने सब्त के दिन मनाने का आदेश न केवल सृष्टि के ईश्वरीय कार्य के वर्णन के साथ दिया (निर्गमन 20:8-11) बल्कि उसने इसे धर्मवैज्ञानिक तरीके से मिस्र की दास प्रथा से इस्राएलियों को मुक्त करने से भी जोड़ा। उसका प्रबोधन कुछ इस प्रकार हैः

और इस बात को स्मरण रखना कि मिस्र देश में तू आप दास था, और वहां से

तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे बलवन्त हाथ और बड़ाई हुई भुजा के द्वारा निकाल लाया; इस कारण तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे विश्रामदिन मानने की आज्ञा देता है (व्यवस्था 5:15)।

"आकाश और पृथ्वी की उत्पत्ति का वृत्तान्त" (2:4)

[4]आकाश और पृथ्वी की उत्पत्ति का वृत्तान्त यह है कि जब वे उत्पन्न हुए अर्थात जिस दिन यहोवा परमेश्वर ने पृथ्वी और आकाश को बनाया।

आयत 4. सृष्टि के वृत्तांत के अन्त में, हम दस में से प्रथम תּוֹלְדוֹת *(टोलडोथ)* वक्तव्य इस प्रकार पाते हैं: **आकाश और पृथ्वी की उत्पत्ति का वृत्तान्त यह है कि जब वे उत्पन्न हुए।** *(टोलडोथ)* का अनुवाद "वृत्तांत," "पीढ़ी" या "इतिहास" भी हो सकता है या जो भी लोग इसका अभिव्यक्ति करना चाहते हों। अब यह माना जा सकता है कि इस संदर्भ में *टोलडोथ* तथ्य को प्रकट करता है कि जो भी सृष्टि के संबंध में उत्पत्ति 1:1-2:3 में कहा गया था उसके समाप्ति को दर्शाता है। अत: जबकि यह तथ्य इस पुस्तक में आने वाले वृत्तांत के प्रस्तावना के रूप में कार्य करता है, तो हमें यहाँ पर ऐसे ही इसे समझने की आवश्यकता है (देखें *भूमिका*, पृष्ठ 4-5)।

मूलपाठ ऐसा कोई संकेत नहीं करता है कि उत्पत्ति के लेखक, 2:4-25 में कोई नई सृष्टि के वृत्तांत के विषय में लिख रहा हो जब वह इस वक्तव्य को लिखता है **जिस दिन यहोवा परमेश्वर ने पृथ्वी और आकाश को बनाया**। इसके विपरीत ऐसा प्रतीत होता है कि लेखक ने पहले सामान्य साहित्यिक प्रणाली का प्रयोग सृष्टि का वृत्तांत में किया (1:1-2:3) और तत्पश्चात् उसने उसका धर्मवैज्ञानिक महत्व रखते हुए विस्तृत वर्णन किया कि वह अपने संदेश को अपने पाठकों के सम्मुख रख सके (2:4-25)।[5]

संज्ञा या शीर्षक "प्रभु परमेश्वर" יְהוָה אֱלֹהִים *(याहवेह 'एलोहिम)* और साधारण शीर्षक "परमेश्वर" का प्रयोग (जैसे उत्पत्ति 1:1-2:3 में पाया जाता है) इस बात की ओर संकेत नहीं करता है कि उत्पत्ति 2:4-25 का कोई दूसरा लेखक है जैसे कि कुछ लोग मानते हैं। *एलोहिम* पुराने नियम में परमेश्वर के लिए सामान्य तौर से प्रयोग किए जाने वाले शीर्षक है परंतु यहोवा उसका व्यक्तिगत नाम है जो केवल इस्राएल के लोग ही परमेश्वर के लिए प्रयोग करते थे। इसलिए, उत्पत्ति 2:4 से प्रारंभ करके, लेखक आदि पुरुष और स्त्री से अदन की वाटिका में, परमेश्वर का व्यक्तिगत संबंध स्थापित करता है। वहाँ उसने परमेश्वर के लिए संयुक्त ईश्वरीय नाम - यहोवा एलोहिम *(याहवेह 'एलोहिम)* प्रयोग किया है। जैसे कि लेखक ने इन शीर्षकों को संयुक्त रूप से प्रयोग किया है तो संभवतः वह इस बात को बताना चाहता है कि परमेश्वर जो इस कहानी में प्रकट है वह इस कायनात का सृष्टिकर्ता तथा इस्राएल का परमेश्वर है। इसी तथ्य को हम निर्गमन 9:30 में भी पाते हैं जहाँ ओलों की विपत्ति यह दर्शाती है कि फिरोन और मिस्री

लोग "प्रभु परमेश्वर का भय" *(याहवेह 'एलोहिम)* मानें। उनको यह समझना चाहिए था कि "परमेश्वर केवल इस्राएलियों का राष्ट्रीय परमेश्वर ही नहीं है बल्कि सर्वशक्तिमान परमेश्वर है जो सारी सृष्टि पर नियंत्रण रखता है।"[6]

यह वक्तव्य कि "जिस दिन यहोवा परमेश्वर ने पृथ्वी और आकाश को बनाया" ने "दिन" יוֹם *(योम)* के अर्थ पर प्रश्न खड़े किए हैं। क्या यह उत्पत्ति 1:1-2:3 का विरोध करता है जो यह कहता है कि सृष्टि की रचना छ: दिन में की गई है? इसका उत्तर है नहीं।

इब्रानी शब्द *योम* (दिन) का संदर्भ के आधार पर कई अर्थ हो सकता है।[7] अध्याय एक में यह अंकों (प्रथम, द्वितीय, तृतीय ... इत्यादि) के साथ प्रयोग किया गया है। यह शब्द दिन के चौबीस घंटे के लिए भी प्रयोग किया गया है (1:5, 8, 13, 19, 23, 31)। संख्या और दिन *(योम)* का संयुक्त प्रयोग पूरे पुराने नियम में पाया जाता है। इसके साथ ही इन आयतों में यह वाक्यांश "सांझ हुई फिर भोर हुआ" इब्रानी संदर्भ में दिन के समय के लिए प्रयोग होता है। मूल पाठकों ने इसका शाब्दिक अर्थ सृष्टि के छ: दिन समझा होगा और इसी के साथ लगा हुआ सातवें दिन को विश्राम दिन समझा जो छ: कार्य दिवस और सब्त को विश्राम दर्शाता है (निर्गमन 20:8-11)।

योम का दूसरा अर्थ दिन का रोशनी भी है जिसको अंधेरा से अलग किया गया है। यह हमें पहला अध्याय में मिलता है (1:5, 14, 16, 18)। हालांकि दिन का रोशनी मौसम के अनुसार और भू मध्य रेखा से उस स्थान की दूरी पर निर्भर करता है। इसलिए इन आयतों में योम, दिन के रोशनी के लिए प्रयोग किया गया है और न कि दिन के चौबीस घण्टे के लिए जिसमें दोनों दिन तथा रात सम्मिलित है (1:5, 8, 13, 19, 23, 31)।

उत्पत्ति 2:4 में *योम* सामान्य समय को इंगित करता है जो अध्याय 1 के सृष्टि के छ: दिन को प्रदर्शित करता है। इब्रानी लेख में בְּיוֹם *(बियोम)* है, जिसको NASB ने शाब्दिक रूप से "दिन में" अनुवाद किया है (देखें 2:17; 3:5; 5:1, 2)। जब *योम* को मूल में अनुवाद करते हैं तो NIV इस अनुच्छेद को इस प्रकार अनुवाद करता है: "जब यहोवा परमेश्वर ने पृथ्वी और आकाश को बनाया।"

कुछ विद्वान *योम* को साधारण तौर से सृष्टि के वक्तव्य जो 2:4 में पाया जाता है से यह कहकर अस्वीकार करते हैं कि इस प्रकार की चूक प्रथम तीन दिन के सृष्टि (1:1-13) का वृत्तांत दिन के चौबीस घण्टे के बजाय कुछ और अनुवाद के संदर्भ में होने की संभावनाएं व्यक्त करते हैं।[8] इस प्रकार का विवेचना विकासवादियों की झड़ी लगा सकती है जो यह तर्क करते हैं कि सृष्टि की रचना की अवधि करोड़ों वर्षों तक हो सकती है। यह प्राकृतिक चयन के साथ साथ आकस्मिक विचार धारा पर कार्य करने वालों की बड़ी सेना खड़ी कर सकती है जो हमारे सम्मुख एक ऐसे संसार का दृश्य प्रस्तुत कर सकते हैं जिसे हम जानते हैं। यद्यपि, *योम* का व्याख्या, विकासवाद का अनुवाद करने के लिए पर्याप्त समय उपलब्ध कराता है, यह मनुष्य की अपनी बनाई सिद्धान्त है जो सृष्टि के वृत्तांत को पूर्व निर्धारित व्याख्या में पढ़ने का प्रयास करती है जो सृष्टि के व्याख्या से

भिन्न है।

इसका समाधान तो केवल यही है कि "मूल पाठ स्वयं अपना अनुवाद करे।" *योम* का अनुवाद, संदर्भ के अनुसार होना चाहिए। उत्पत्ति 2:4 में यह सृष्टि के पूरे छः दिनों को सम्मिलित करता है। इस प्रकार का अनुवाद इस मूल पाठ में विकासवाद की सिद्धान्त का अनुमोदन नहीं करती है। लेखक यह सुनिश्चित करता है कि सृष्टि की प्रक्रिया में परमेश्वर ने कहा और संसार अस्तित्व में आया। तब, जब वह बोलता गया तो समुद्र, आसमान और धरती जीव जन्तु से भर गई। इस पूरे सृष्टि का चरम मनुष्य की रचना है। परमेश्वर को इसको बनाने के लिए हज़ारों या लाखों वर्षों की आवश्यकता नहीं पड़ी कि कुछ बनाए और फिर उसका परीक्षण करे और त्रुटि देखे, तत्वों का संयोजन करे, अनुवांशिक परिवर्तन देखे, या अग्रिम दुर्घटनाओं के द्वारा इस अद्‌भुत दुनिया का निर्माण इसकी सभी रूपों में करे। इब्रानियों के लेखक के शब्दों में, "विश्वास ही से हम जान जाते हैं, कि सारी सृष्टि की रचना *परमेश्वर के वचन* के द्वारा हुई है। यह नहीं, कि जो कुछ देखने में आता है, वह देखी हुई वस्तुओं से बना हो" (इब्रा. 11:3; जोर दिया गया)।

अदन की वाटिका और मनुष्य (2:5-7)

5तब मैदान का कोई पौधा भूमि पर न था, और न मैदान का कोई छोटा पेड़ उगा था, क्योंकि यहोवा परमेश्वर ने पृथ्वी पर जल नहीं बरसाया था, और भूमि पर खेती करने के लिये मनुष्य भी नहीं था; 6तौभी कोहरा पृथ्वी से उठता था जिस से सारी भूमि सिंच जाती थी 7और यहोवा परमेश्वर ने आदम को भूमि की मिट्टी से रचा और उसके नथनों में जीवन का श्वास फूंक दिया; और आदम जीवित प्राणी बन गया।

आयत 5. ऐसा कहा जाता है कि इस अनुच्छेद को किसी दूसरे लेखक ने, अध्याय 1 के सृष्टि के वृत्तांत का खण्डन करने के लिए, विशेषकर इस विचार धारा के साथ कि जब मनुष्य की रचना की गई तो उस समय धरती पर कोई भी पेड़ पौधे नहीं थे, लिखा। इस विचार धारा के विपरीत, उत्पत्ति के लेखक ने पीछे मुड़कर यह वर्णन करने का प्रयास किया कि तीसरे और छटे दिन क्या हुआ, का विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत किया है। उत्पत्ति 1:11, 12 के अनुसार, इससे पहले कि परमेश्वर छटे दिन मनुष्य बनाए (1:26-28), उसने ने तीसरे दिन पेड़ पौधे और विभिन्न प्रकार के फल वाले वृक्ष बनाए। तब 1:29 में यह लिखा है कि परमेश्वर ने मनुष्य को सभी पेड़ पौधे तथा सभी फल वाले वृक्ष को उसको जीवित रहने और खाने के लिए दिया। इससे हम इस बात का आंकलन कर सकते हैं कि पेड़ पौधे मनुष्य के सृष्टि से पहले बनाए गए थे ताकि वे मनुष्य के खाने के लिए भोजन पैदा करे।

किसी ने ऐसा भी सुझाव दिया कि पाँचवें आयत में, लेखक अपने पाठकों को

तीसरे दिन के सृष्टि के पहले ले जाना चाहता है जब "पृथ्वी बेडौल और सुनसान पड़ी थी"[9] (या उजाड़[10]; 1:2)। अगर ऐसा न भी हो, तो तीसरे दिन जब सूखी भूमि दिखी, **तो स्पष्ट है कि पृथ्वी पर कोई जंगली झाड़ी और पेड़ पौधे नहीं उगे थे।**

दो अलग अलग प्रकार के पेड़ पौधों का यहाँ वर्णन है। पहली प्रकार के जो पेड़ पौधे थे वे हैं जंगली झाड़ी (שִׂיחַ, *śiach*), जिसका वर्णन यहाँ पर किया गया है और इसके अलावा पुराने नियम में दो अन्य स्थानों पर भी इसके बारे में वर्णन मिलता है। उत्पत्ति 21:15 में हम पढ़ते हैं कि जब हाजिरा का भोजन और पानी समाप्त हुआ और जब तक कि एक स्वर्गदूत उनकी सहायता करने नहीं आया तो उसने अपने पुत्र इश्माएल को जंगली झाड़ी के पास छोड़ा। अगला स्थान जहाँ इस झाड़ी के बारे में पढ़ने को मिलता है वह अय्यूब के साथ है जब उसने अपनी परिस्थिति को जंगली झाड़ी समान भूमि पर पड़ा हुआ, अकाल में पड़ा हुआ और पीड़ा में कराहता हुआ, तिरस्कृत समझता है (अय्यूब 30:4, 7)।

पेड़ पौधों के लिए इब्रानी में עֵשֶׂב *('एसेब')*, शब्द का प्रयोग हुआ है, इन दोनों में बस इतनी भिन्नता है कि क्या वह खाया जा सकता था कि नहीं। *'एसेब* का प्रयोग खाए जाने योग्य पेड़ पौधों के लिए किया गया है (2:5; KJV; NRSV)। इससे मिलता जुलता पौधा है: हरी सब्ज़ी, हरा प्याज, सब्ज़ियाँ और घास जिसे जानवर चरते हैं।[11] इससे हम यह पता लगा सकते हैं कि मनुष्य के रचना से पहले वे पेड़ पौधे थे जिनकी खेती बाड़ी करने की आवश्यकता थी। लेखक ने इस परिस्थिति के दो कारण बताए: **प्रभु परमेश्वर ने अभी तक पृथ्वी पर बारिश नहीं बरसाई थी और भूमि की खेती करने के लिए कोई मनुष्य भी नहीं थे।** पहला वक्तव्य कि पृथ्वी पर बारिश नहीं बरसी थी, थोड़ा आश्चर्यचकित करने वाला है, जब तक कि यह दक्षिण मेसोपोटामिया के क्षेत्र को संबोधित न करता हो, जहाँ अदन की वाटिका थी। इस क्षेत्र में बारिश नहीं होती थी।[12]

आयत 6. बारिश के बजाय छठी आयत कहती है **धरती से कोहरा** אֵד *(एद)* उठता था और **उससे भूमि सिंचती थी।** पुराने नियम में उत्पत्ति 2:6 तथा अय्यूब 36:27 ही दो ऐसे संदर्भ हैं जहाँ पर इस शब्द का प्रयोग किया गया है और इन दोनों स्थानों में NASB ने "कोहरा" का प्रयोग किया है। कुछ अनुवादों में इसका संभावित अर्थ हासिए पर "बहना" या "बाढ़" भी लिखा हुआ मिलता है। इब्रानी शब्द *एद* संभवतः अक्कादियन शब्द *एद्रू* से लिया गया है जो फरात नदी के सलाना जलस्तर के बढ़ने से प्राचीन बाबूल को जल से घेर लेते थे;[13] इसलिए NIV ने इसका अनुवाद जलधाराएं करके किया है (देखें NRSV)। "बाढ़" और "जलधाराएं" जो अदन की वाटिका को सिंचती थी वह केवल दजला या फरात नदी की जल ही नहीं थी बल्कि भूमिगत् जल के स्रोत जो ज़मीन के तल पर भाप बनकर भूमि को सिंचती थी भी है। जो भी इसका व्याख्या जाए, भूमि पर साग सब्ज़ी और पेड़ पौधों की कमी, मनुष्य का न होना भी इसका मुख्य कारण है क्योंकि उसके बिना ज़मीन को सिंचना भी संभव नहीं है और झरने इतने उपयोगी भी सिद्ध नहीं हो सकते हैं।

आयत 7. अब तक लेखक ने **मनुष्य** की **रचना** की यह प्रमाण देते हुए कि **परमेश्वर** ने उसे **धूल और मिट्टी से** बनाया है, विस्तृत विवरण दे दिया है। पुराने नियम में शब्द "रचना किया," יָצַר *(यात्सार)* विभिन्न रूपों में पाया जाता है। यह सृष्टि के रूपक में अधिक उपयुक्त है क्योंकि बाद में यह कुम्हार के बर्तन बनाने के बारे में प्रयोग हुआ है (यिर्म. 18:1-6)। यह कुम्हार, ईश्वरीय सृष्टिकर्ता, यहोवा का प्रतीक है; और मिट्टी का बर्तन के रूप में ढलना मनुष्य का परमेश्वर के द्वारा सृष्टि का प्रतीक है (कालान्तर में परमेश्वर का इस्राएल को रूप देना)।[14] यहाँ पर जो दृश्य हमें दिखाई देता है उसमें परमेश्वर एक कुशल कारीगर के रुप में दिखाई दे रहा है जो व्यक्तिगत रूप से मनुष्य को अपनी ही स्वरूप में बनाने में व्यस्त है।

इब्रानी भाषा में यहाँ पर शब्दों का हेर फेर है कि परमेश्वर ने मनुष्य אָדָם (*'adam*) को भूमि אֲדָמָה (*'adamah*) के मिट्टी से रचा। शब्दों की रचना यह बताती है कि मनुष्य न केवल व्यक्तिगत रूप से परमेश्वर से संबंधित है परंतु वह तो भूमि से भी संबंधित है। इस पाठ में इब्रानी शब्द "धूल" עָפָר *(हापार)*, और "भूमि" का पर्यायवाची है जिस प्रकार यह हमें तीसरे अध्याय में भी मिलता है। मनुष्य के पाप के कारण भूमि पर भी श्राप आ पड़ा (3:17) वह अपने आप से नहीं बच सका; बल्कि उसे "वापस मिट्टी में मिलना होगा," जिससे परमेश्वर ने उसे बनाया था। परमेश्वर ने यूँ कहा, "अन्त में मिट्टी में मिल जाएगा; क्योंकि तू उसी में से निकाला गया है, तू मिट्टी तो है और मिट्टी ही में फिर मिल जाएगा" (3:19)।

उत्पत्ति 2:7 तात्पर्य हुआ कि मनुष्य केवल मिट्टी का एक ढला मात्र ही नहीं बल्कि इससे बढ़कर है। वह आकस्मिक रसायन का मिश्रण, विभिन्न अंगों का जुड़ा हुआ ढाँचा और विद्युत का आवेग नहीं है। उसमें जीवन का वरदान है जिसे केवल कहता है कि परमेश्वर ने **उसके नथनों में जीवन का श्वास फूंक दिया** तो इसका यह परमेश्वर ही दे सकता है। ईश्वरीय श्वास जो मनुष्य के "नथनों" में "फूँका गया" वह "जीवन" का "श्वास" נְשָׁמָה *(नेशमाह)* है और इसका नज़दीकी समानान्तर हमें यहेजकेल के प्रचार में मिलता है जो उसने बाबुल के बन्धुवाई के समय प्रचार किया था (यहेज. 37:1-10)। यह सत्य है कि उत्पत्ति 2:7 में श्वास के लिए "नेशमाह" शब्द का प्रयोग हुआ है जबकि भविष्यवक्ता ने श्वास רוּחַ *[रूवाह]* के लिए अलग शब्द प्रयोग किया। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि यह दो शब्द अदल बदलकर कई स्थानों में प्रयोग किया गया है: "परंतु यह मनुष्य में आत्मा *[रूवाह]* है और सर्वशक्तिमान की श्वास *[नेशमाह]* उन्हें समझ प्रदान करती है" (अय्यूब 32:8; देखें उत्पत्ति 7:22; अय्यूब 27:3; 33:4; 34:14; यशा. 57:16)।

परमेश्वर ने यहेजकेल भविष्यवक्ता से इस्राएल के लोग, जिन्होंने बन्धुवाई में अपनी सारी आशाएं खो दीं थीं, से बोलने को कहा। उसको उनसे यह कहने के लिए कहा गया, "हे सूखी हड्डियों, यहोवा का वचन सुनो" (यहेज. 37:4)। तब वचन के द्वारा प्रभु ने यह पुष्टि की, "देखो, मैं आप तुम में सांस समवाऊंगा, और तुम जी उठोगे" (यहेज. 37:5)। परमेश्वर ने भविष्यवक्ता से कहा, "सांस *[रुआह]*

से भविष्यद्वाणी कर, ... सांस *[रुआह]* से भविष्यद्वाणी कर के कह, ... परमेश्वर यहोवा यों कहता है, 'आकर इन घात किए हुओं में समा जा कि ये जी उठें' " (यहेजकेल 37:9)। यहेजकेल ने वैसा ही किया जैसा परमेश्वर ने उसे करने के लिए कहा था; और जैसे ही उसने भविष्यवाणी की, "सांस [*रुआह*] उन में आ गई, ओर वे जीकर अपने अपने पांवों के बल खड़े हो गए; ..." (यहेज. 37:10)।

इस वृत्तांत में बाबुल इस्राएलियों के कब्र दिखाती है और बंधुए सूखे, आशा रहित बेजान हड्डियों के घाटी में पड़े हुए लाश के समान है। यहेजकेल ने उनसे आशा का वचन बोला जिसमें आत्मिक पुनरूत्थान और बंधुवाई के ज़मीन से वापस लौटने की आशा थी। जैसे ही उन्हें यह संदेश मिला त्यों ही परमेश्वर का श्वास *(रुआह)* उनमें प्रवेश किया और वे अपने पांवों के बल खड़े हो गए। यहाँ पर यहेजकेल 37:1-10 और उत्पत्ति 2:7 में समानता देखी जा सकती है। यह और भी प्रभावशाली तब हो जाती है जब *रुआह,* रूवाह को इस अनुच्छेद में "सांस" करके भी अनुवाद किया गया है। इसका अर्थ संदर्भ के अनुसार "आत्मा" या "हवा" भी हो सकता है। परमेश्वर का आत्मा और उसका वचन का संयोजन, बंधुवाई के धरती से इस्राएल के आत्मिक पुनरूत्थान के इस अनुच्छेद के उपसंहार में स्पष्ट देखा जा सकता है। परमेश्वर ने कहा, "और मैं तुम में अपना आत्मा [*रुआह,* सांस] समवाऊंगा, और तुम जीओगे, और तुम को तुम्हारे निज देश में बसाऊंगा; तब तुम जान लोगे कि मुझ यहोवा ही ने यह कहा, और किया भी है, यहोवा की यही वाणी है" (यहेजकेल 37:14)।

आत्मा तथा परमेश्वर के वचन में निकट संबंधता उत्पत्ति के प्रथम दो अध्याय में स्पष्ट दिखाई देता है। उत्पत्ति 1:1-3 में परमेश्वर का आत्मा (*रुआह, "breath"* or *"wind"*) जल के ऊपर मण्डलाता था। जब परमेश्वर ने कहा तो जो बेडौल और सुनसान पड़ी थी वह आकार लेने लगी। जैसे वह बोलता गया, जीवन उन्नति करता गया। अन्त में सृष्टि के चरमोत्कर्ष पर परमेश्वर ने फिर से कहा, "हम मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार अपनी समानता में बनाएं" (1:26)। यदि हम 2:7 को परमेश्वर के (बोले गए) वचन (1:26) से जोड़ें तो हम पाते हैं कि इसमें परमेश्वर का सांस *(नेशमाह)* जो मनुष्य के नथनों में फूंका गया था जिससे मनुष्य जीवित प्राणी बना, संलग्न है।

"सांस फूंका" की घनिष्ठता को ऐसा समझा जा सकता है मानो "बहुत ही व्यक्तिगत, मुँह से मुँह का चुंबन, इसको महत्व देना और करना है और स्वयं का समर्पण करना है।"[15] यह यीशु के कार्य से भी प्रकट होता है जब वह पुनरुत्थान के पश्चात प्रेरितों पर प्रकट हुआ था। यूहन्ना 20:22 में लिखा है, "यह कहकर उस ने उन पर फूंका और उन से कहा, पवित्र आत्मा लो।" पुनरुत्थित प्रभु की सांस (आत्मा) ने शिष्यों में नए जीवन तथा आशा का संचार किया जो नए समाज का केन्द्र (एक नई सृष्टि) बना - जिसे हम मसीह का आत्मिक देह भी कहते हैं।

उत्पत्ति 2:7 के अभिव्यक्ति कि **आदम जीवित प्राणी** נֶפֶשׁ חַיָּה (*नेपेश चययाह*) **बन गया** को सामान्यता इसके अनुवाद के कारण गलत समझा जाता है। कुछ विद्वानों का मानना है कि यह मनुष्य के अमरता की ओर संकेत करता है

कि वह मृत्युपरांत भी जीवित रहता है जिसे वह जानवरों से भिन्न बनाती है। यहाँ पर सबसे बड़ी समस्या यह है कि जीवित प्राणी *(नेपेश चययाह)* का प्रयोग पुराने नियम में कोई नई बात नहीं है। यह मछलियों तथा हर प्रकार के समुद्र प्राणी (1:20, 21); धरती के प्राणी (1:24); जंगली जानवर, पक्षी और अन्य जानवरों (1:30) के लिए प्रयोग किया गया है। यह अनुच्छेद यह नहीं कहता है कि जानवरों की तुलना में मनुष्य को अमरत्व प्राप्त है।[16] इस प्रकार की शिक्षा पर प्रभु यीशु मसीह का संपूर्ण प्रकाशन की आवश्यकता है जिसने "मृत्यु का नाश किया, और जीवन और अमरता को उस सुसमाचार के द्वारा प्रकाशमान कर दिया" (2 तीमु. 1:10)। उसने अपने शिष्यों को इस प्रकार उत्साहित किया कि "जो शरीर को घात करते हैं, पर आत्मा को घात नहीं कर सकते, उन से मत डरना" (मत्ती 10:28)। हालांकि उत्पत्ति 2:7 का विषय आत्मा की अमरत्व नहीं है परंतु यह पुस्तक हमें निश्चित तौर पर यह सिखाती है कि यद्यपि मनुष्य और जानवर दोनों जीवित प्राणी है परंतु केवल मनुष्य को ही परमेश्वर के साथ आमने सामने संगति करने का सौभाग्य प्राप्त है क्योंकि वह परमेश्वर के स्वरूप में बनाया गया है (1:26, 27)।

वाटिका में मनुष्य का जीवन शैली (2:8-17)

उत्पत्ति दूसरे अध्याय में वाटिका का वर्णन जारी है। इस बात पर ज़ोर देते हुए लेखक लिखते हैं कि परमेश्वर ने मनुष्य की आवश्यकतानुसार उसके प्रथम घर में सब कुछ उपलब्ध कराया है। लेखक ने वाटिका को अच्छी संचित भूमि करके प्रस्तुत किया है जिसमें सब प्रकार के पेड़ पौधे पाए जाते हैं।

अदन का वाटिका (2:8, 9)

[8]और यहोवा परमेश्वर ने पूर्व की ओर अदन देश में एक वाटिका लगाई; और वहां आदम को जिसे उसने रचा था, रख दिया। [9]और यहोवा परमेश्वर ने भूमि से सब भांति के वृक्ष, जो देखने में मनोहर और जिनके फल खाने में अच्छे हैं उगाए, और वाटिका के बीच में जीवन के वृक्ष को और भले या बुरे के ज्ञान के वृक्ष को भी लगाया।

आयत 8. ऐसा समझा जाता है कि उत्पत्ति 2:7 यह इंगित करती है कि मनुष्य की रचना, पेड़ पौधों से पहले की गई और इस प्रकार यह मूल पाठ, अध्याय 1 में वर्णित सृष्टि के वृत्तांत के क्रम का विरोध करता है। हाँ यह सत्य है कि जिस क्रम में वे यहाँ पर वर्णित है वे पिछली अध्याय के क्रम से विपरीत है; 2:8, 9 हमें यह नहीं बताता है कि पेड़ पौधों की रचना इस धरती पर पहले की गई। बल्कि यह आयतें बताती हैं कि किस प्रकार परमेश्वर ने इस पृथ्वी पर मनुष्य के लिए पहला घर बनाने की तैयारी की। मनुष्य की रचना में **परमेश्वर** को कुम्हार के प्रतीकात्मक रूप में दर्शाया गया है जिसने मनुष्य को धरती के धूल से

बनाया (2:7), अत: वह यहाँ पर बागवानी करने वाले के रूप में प्रतीत होता है जिसने मनुष्य के लिए एक घर बनाने में अति सावधानी बरती। जब उसने **पूर्व में अदन की वाटिका लगाई** तो उसने उसमें मनुष्य के लिए उपयुक्त पर्यावरण भी तैयार किया।

इब्रानी भाषा में वाटिका के लिए גַּן, *(गन)* शब्द प्रयोग हुआ है जो ज़मीन के ऐसे भूभाग को इंगित करता है जिसमें खेती बाड़ी की जाती हो और जिसके चारों ओर बाड़ा लगा हो। यह एक ऐसे स्थान है जिसमें फूल, फल और विभिन्न प्रकार के साग सब्ज़ियों की खेती की जाती है।[17] सच्चाई तो यह है कि परमेश्वर ने इस वाटिका को पूर्व की ओर ["in"; NIV; NRSV] लगाया; तो यह स्थान मूल पाठकों के दृष्टिकोण से इस्राएल देश के पूर्व की ओर था। यह अभिव्यक्ति कि "अदन में" यह सुझाव देता है कि परमेश्वर ने जहाँ यह वाटिका लगाई थी मूलतः उसे "अदन" कहा जाता था जो संभवतः मेसोपोटामिया के घाटी में स्थित था।

प्राचीन मध्य पूर्व का अध्ययन यह बताता है कि इब्रानी शब्द עֵדֶן *('एदेन)* संभवतः सुमेर भाषा के शब्द से अवतरित है जिसका अर्थ "मैदान" या "घास का मैदान" हो सकता है; परंतु आधुनिक आंकड़ा इसकी उत्पत्ति पश्चिमी सामी सभ्यता की ओर संकेत करता है जिसका संबंध "भोग विलासिता, पर्याप्त संसाधन, आनंद या भरपूरी है।[18] LXX के अनुवादक इस शब्द को मूल इब्रानी शब्द עָדַן, *(अदन)* से संबंधित करते हैं जिसका अर्थ "आनन्द लेना या प्रसन्नचित्त" होना है। उन्होंने अदन को "आनन्द की वाटिका" समझा जो प्रथम **मनुष्य** के लिए निवास **स्थान ठहरा।** इब्रानी शब्द का यूनानी समानांतर παράδεισος *(पाराडेइसोस)* है और स्वाभाविक रूप से उत्पत्ति के अदन की वाटिका का नए नियम के स्वर्गलोक से प्रतीकात्मक संबंध है (लूका 23:43; 2 कुरि. 12:4; प्रका. 2:7)।[19]

आयत 9. परमेश्वर ने वाटिका में सब प्रकार के **वृक्ष उगाकर** मनुष्य के लिए पर्याप्त भोजन वस्तु का प्रबंध किया था। अधिकांश **फल देखने में सुहावने तथा खाने में स्वादिष्ट थे** परंतु उसने विशेषकर दो वृक्षों का वर्णन किया था जो वाटिका के मध्य थे: **जीवन का वृक्ष** और **भले और बुरे के ज्ञान का वृक्ष।** भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष, जो वाटिका के मध्य है, का वर्णन 3:3 में भी पाया जाता है।

प्रथम वृक्ष का पहचान "जीवन के वृक्ष" के रूप में की गई है जिसका वर्णन केवल उत्पत्ति 2:9 और 3:22, 24 में ही पाया जाता है। यद्यपि यह वास्तविक पेड़ है जिससे मनुष्य फल तोड़कर खा सकता था (3:22), लेकिन यह कभी न अन्त होने वाले जीवन का भी प्रतीक है जो केवल परमेश्वर से ही मिल सकता है। इसलिए, जब स्त्री और पुरुष ने पाप किया तो उन्हें वाटिका से बाहर कर दिया गया क्योंकि वे अपने परमेश्वर से बलवा करके वहाँ पर अनन्तकाल का जीवन का उपभोग नहीं कर सकते थे (3:24)।

नीतिवचन में "एक जीवन का वृक्ष" शब्दांश कई बार प्रयोग हुआ है (नीति. 3:18; 11:30; 13:12; 15:4); परंतु इन सभी अनुच्छेदों में यह बुद्धि, धार्मिक जीवन, आशा पूर्ति और जो अपने मुँह से चंगाई के शब्दों का उच्चारण करता है, के

लिए प्रयोग हुआ है। दूसरे शब्दों में "एक जीवन का वृक्ष" व्यक्तिगत जीवन में सच्चे ज्ञान के साथ "परमेश्वर का भय" दर्शाता है (नीति. 3:18; 9:10)। "एक जीवन का वृक्ष" (बुद्धि) का "फल" का सत्यापन धर्मी जीवन से होता है (नीति. 11:30) जो कोमल शब्दों के द्वारा दूसरों के लिए आशीष का कारण होता है, दूसरों को उठाता है और किसी की आशा की पूर्ति करता है (नीतिव. 13:12; 15:4)। नए नियम में "एक जीवन का वृक्ष" बहुतायत की जीवन (अदन का अस्तित्व) की अभिव्यक्ति है जो छुड़ाए हुओं के लिए परमेश्वर स्वर्ग में अनंतकाल के लिए प्रबंध करेगा (प्रका. 2:7; 22:2, 14, 19)।

दूसरा वृक्ष की पहचान "भले और बुरे के ज्ञान" के वृक्ष के रूप में की गई है। इस वृक्ष का अर्थ क्या है? इसके लिए निम्न व्याख्या प्रस्तुत की गई है:

1. एक मतानुसार प्रथम जोड़े ने जो ज्ञान प्राप्त किया था वह है लैंगिक ज्ञान, क्योंकि वर्जित फल का सेवन करने के पश्चात उनकी प्रतिक्रिया ऐसी थी: "उन्होंने जाना कि वे नंगे थे" (3:7)। पाप करने से पहले भी स्त्री और पुरुष नंगे थे और एक दूसरे से नहीं लजाते थे; लेकिन पाप करने के पश्चात, वे लज्जित हुए। कुछ लोगों का मानना है कि भले और बुरे के ज्ञान का तात्पर्य यह है कि वे अपने लैंगिक विषमता के प्रति जागरूक हुए।[20]

जबकि कुछ विचार धारा इस तथ्य के विरूद्ध है। सर्वप्रथम, आदम और हव्वा का नया ज्ञान लैंगिक जागरूकता है, तो लैंगिकता का श्रेय परमेश्वर को दिया जाना चाहिए। आदम का पाप में गिरने के पश्चात, परमेश्वर ने कहा, "मनुष्य भले बुरे का ज्ञान पाकर *हम में से एक के समान* हो गया है" (3:22; जोर दिया गया)। प्राचीन काल के लोगों का विश्वास था कि उनके देवी देवता लैंगिक कार्य में संलग्न थे और उर्वता पूजा पद्धति की मान्यता के अन्तर्गत उपासकों को उन देवी देवताओं के मन्दिरों में देव दासियों के साथ संभोग करना पड़ता है। यह एक विकृत विचार है कि यह मूल पाठ "यहोवा परमेश्वर" मनुष्य के समान लैंगिक प्रकृति वाला है जिसे मनुष्य के समान लैंगिक अभिव्यक्ति की आवश्यकता पड़ती हो।[21] निश्चय यह वह नहीं हो सकता है जिसे उसने प्रतिबंधित किया हो।

यदि "भले और बुरे का ज्ञान" लैंगिकता की ओर संकेत करता है, तो परमेश्वर उसकी मनाही स्त्री और पुरुष को क्यों करता, जबकि उसने उन्हें लैंगिक प्राणी बनाया? पाप से पहले परमेश्वर ने उन्हें जो आज्ञा दी थी वह "फूलो-फलो, और पृथ्वी में भर जाओ" की थी (1:28)। इसका अभिप्राय सहवास का कुछ ज्ञान है, जैसा पुरुष को दी आज्ञा भी कहती है कि "वह अपने माता पिता को छोड़कर अपनी पत्नी से मिला रहेगा, और वे एक ही तन बनें रहेंगे" (2:24)। यह सब आदम और हव्वा के वर्जित फल को खाने से पहले संभोग की संभावना को बताते हैं क्योंकि परमेश्वर ने इसी की आज्ञा दी थी।[22] निश्चय ही इसको मना नहीं किया गया था।

2. दूसरा विचार धारा यह है कि "भले और बुरे का ज्ञान" का तात्पर्य स्त्री और पुरुष को परमेश्वर के समान असीमित ज्ञान हो गया होगा, जिसे हम सर्वज्ञानी भी कह सकते हैं। सांप के यह शब्द, "तुम भले बुरे का ज्ञान पाकर

परमेश्वर के तुल्य हो जाओगे," कुछ ऐसा ही जान पड़ता है। इसका उदाहरण हमें दाऊद और अबसालोम के टूटे रिश्ते में मिलता है। जब योआब ने तको नगर के एक स्त्री को राजा के पास यह कहकर भेजा कि वह अपने पुत्र को यरूशलेम लौटने दे यद्यपि उसने अपने भाई अमनोन को भी मार डाला था। बुद्धिमान स्त्री ने यह कहकर दाऊद की प्रशंसा की कि "भले और बुरे" का विभेद करने में उसकी क्षमता "परमेश्वर के दूत" तुल्य है; कुछ आयतों के बाद उसने कहा कि राजा "मेरा प्रभु परमेश्वर के एक दूत के तुल्य बुद्धिमान है, यहां तक कि धरती पर जो कुछ होता है उन सब को वह जानता है" (2 शमूएल 14:17, 20)।

यह विचार धारा भी कम से कम दो कारणों से सम्मति जताने में असफल रहता है। प्रथम, तको की स्त्री दाऊद के ज्ञान को बढ़ा चढ़ाकर बोल रही थी, क्योंकि उसको पृथ्वी का सारा ज्ञान प्राप्त नहीं था। दूसरी बात, बाइबल के कहानी के आधार पर, आदम और हव्वा को सर्वज्ञान प्राप्त नहीं हुआ, बल्कि ऐसा लग रहा है कि वे परमेश्वर, सांप और जीवन के विषय बहुत थोड़ा जानते थे। यदि प्रेरित पौलुस - हज़ारों वर्षों पश्चात - यह कह सकता है कि वह "अधूरा" ज्ञान रखता है (1 कुरि. 13:9) तो आदम और हव्वा, मनुष्य के इतिहास के आरंभिक यात्रा के दिनों में इस विषय पर कितना थोड़ा जानते थे।

3. तीसरा विचारधारा यह है कि "भले और बुरे का ज्ञान" हर एक व्यक्ति का भले और बुरे के बीच विभेद करने की क्षमता से है, जिसके बिना मनुष्य अपने कार्य के प्रति ज़िम्मेदार नहीं है। मरूस्थल में परमेश्वर ने इस्राएलियों से कहा कि उनके बलवा करने के कारण वे कनान देश में प्रवेश नहीं करेंगे; परंतु उनके "छोटे बच्चे" जिनको "भले और बुरे का ज्ञान नहीं था" (व्यव. 1:39) किसी दिन उस उत्तम देश में प्रवेश करेंगे और उसके उत्तराधिकारी होंगे। इसी प्रकार का वक्तव्य भी वृद्ध बर्जिल्लै ने इस्राएल के इतिहास में वर्षों बाद कहा था। जब दाऊद ने उसे अपने दरबार में दरबारी के होने का अवसर दिया तो उसने एक प्रश्न पूछा जिसका उत्तर 'नहीं' था: "क्या मैं भले बुरे का विवेक कर सकता हूँ" (2 शमूएल 19:35)। अस्सी वर्ष के अवस्था में उसने सोचा कि वह राजा को भले और बुरे का विभेद करके उचित सलाह नहीं दे सकता है। उसके मस्तिष्क तथा शारीरिक अवस्था राजा को इस प्रकार का सलाह देने के लिए कमजोर हो चुके थे इसलिए उसने राजा के निमंत्रण को स्वीकार नहीं किया।[23]

उपरोक्त दोनों उदाहरण अदन की वाटिका में आदम और हव्वा के परिस्थिति पर लागू नहीं होती हैं। परमेश्वर ने छोटे बच्चों को जिन्होंने उत्तरदायित्व की अवस्था प्राप्त नहीं की थी, इस्राएलियों के मरुस्थल में बलवा का ज़िम्मेदार नहीं ठहराया, चाहे वे इस बलवा के भागी थे या फिर नहीं थे। बर्जिल्लै के स्थिति में वह अति वृद्ध होने के कारण राजा को कठिन विषयों पर निर्णय लेने में असमर्थ थे। इन उदाहरणों के ठीक विपरीत, आदम और हव्वा न तो बहुत छोटे थे और न ही अति वृद्ध थे कि वे परमेश्वर के आज्ञा को भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष के फल खाने के विषय समझ न पाते। वे उस चेतावनी को समझते थे कि यदि वे इस वृक्ष में से खाएंगे तो निश्चय ही मर जाएंगे; इसलिए वे अपने

अनाज्ञाकारिता के प्रति पूर्ण ज़िम्मेदार थे।

भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष की महत्व निर्धारित करने के लिए सांप के वक्तव्य पर ध्यान देना आवश्यक है: "... जिस दिन तुम उसका फल खाओगे उसी दिन तुम्हारी आंखें खुल जाएंगी, और तुम भले बुरे का ज्ञान पाकर परमेश्वर के तुल्य हो जाओगे" (3:5)। सांप के दावे में कुछ सच्चाई थी। मनुष्य के पाप में गिरने के पश्चात परमेश्वर ने कहा, "मनुष्य भले बुरे का ज्ञान पाकर हम में से एक के समान हो गया है" (3:22)। मनुष्य की परीक्षा तथा उसके प्रथम पाप के संदर्भ में केवल एक ही बात में, पाप और बुराई के प्रति जागरूक होकर, वह परमेश्वर के तुल्य हो गया था। बुद्धिमान ने लिखा, "यहोवा का भय मानना बुद्धि का मूल है" (नीति. 1:7)। यह हमें सलाह देता है कि "मनुष्य की ठीक परिस्थिति यह है कि यदि वह सचमुच बुद्धिमान हो और विश्वास से परमेश्वर में पूरा जीवन यापन करे और स्वयं की दृष्टि में बुद्धिमान न हो।"[24]

यहेजकेल 28:1-19, उत्पत्ति के वृत्तांत के समांतर वृत्तांत का वर्णन करता है। प्रतीकात्मक भाषा में भविष्यवक्ता ने यह वर्णन किया है कि सोर के राजा के मन में घमण्ड पैदा होने के कारण उसे परमेश्वर के वाटिका (अदन) से बाहर निकाल दिया गया। उसने सोचा कि उसको दानिय्येल से अधिक ज्ञान प्राप्त है और वह ईश्वर है (यहेज. 28:1-6, 12-17)। सोर के इस राजा का घमण्ड और अदन की वाटिका में मनुष्य का दृष्टिकोण संस्मरणीय है; क्योंकि परमेश्वर को छोड़कर कहीं और से ज्ञान की स्रोत की चाह करना और परमेश्वर की इच्छा का प्रकाशन का नैतिक स्वायत्त और इस बात का निर्णय करना कि क्या उचित है और क्या अनुचित है, में स्वयं को ईश्वर तुल्य करना है। केवल परमेश्वर, जिसने सब कुछ बनाया है और जिसे समय तथा स्थान में सीमित नहीं किया जा सकता है, ही सचमुच जान सकता है कि मनुष्य के लिए क्या भला और बुरा है। यद्यपि कमज़ोर और सीमित मनुष्य के लिए परीक्षा सदैव ईश्वरीय प्राथमिकता को छीन लेता है।

चार नदियाँ (2:10-14)

[10]और उस वाटिका को सींचने के लिये एक महानदी अदन से निकली और वहां से आगे बहकर चार धारा में हो गई। [11]पहिली धारा का नाम पीशोन है, यह वही है जो हवीला नाम के सारे देश को जहां सोना मिलता है घेरे हुए है। [12]उस देश का सोना चोखा होता है, वहां मोती और सुलैमानी पत्थर भी मिलते हैं। [13]और दूसरी नदी का नाम गीहोन है, यह वही है जो कूश के सारे देश को घेरे हुए है। [14]और तीसरी नदी का नाम हिद्देकेल है, यह वही है जो अश्शूर के पूर्व की ओर बहती है। और चौथी नदी का नाम फरात है।

आयत 10. वाटिका उस **नदी** के जल से सिंचित था जो अदन से **बहती थी**। यह नदी **वाटिका से होकर** बहती थी ताकि वह **वाटिका** को **सिंचित करे और**

वहाँ से यह चार नदियों में विभाजित हो जाती थी। मूल इब्रानी शब्द רָאשִׁים *(रोशीम)*, नदियाँ, दूसरे इब्रानी शब्द רֹאשׁ *(रोश),* जिसका अर्थ सिर है से लिया गया है।[25] परंतु यह स्पष्ट नहीं है कि इस संदर्भ में इस शब्द को किस प्रकार अनुवाद किया जाना चाहिए। NIV अनुवाद कहता है कि नदी "अदन से बहती" थी और "चार मुख्य भागों में विभाजित हो जाती थी।" परंतु NRSV, NJPSV कहती है कि अदन से यह नदी विभाजित होती थी और चार शाखाओं में बंट जाती थी।

आयत 10 की कठीन भाषा को देखते हुए,[26] कुछ विद्वानों का मानना है कि लेखक ने अदन की वाटिका का काल्पनिक विवरण देते हुए यह प्रदर्शित किया है कि वह आदि मानव का प्रथम आवास था। यद्यपि इस मत को शीघ्र ही खारिज किया जा सकता है क्योंकि लेखक ने वाटिका की परिस्थिति मेसोपोटामिया के क्षेत्र में निर्धारित किया है जहाँ "दजला" और "फरात" नदियाँ बहती है (2:14)।

अन्य विद्वानों ने इसकी भाषा को शाब्दिक विवरण माना है और उन्होंने दो संभावित स्थल अदन की वाटिका के लिए प्रस्तावित किया है। एक तरफ यदि *रोशिम* का अर्थ "मुख्य जलधारा" है तब तो वाटिका पूर्वी तुर्की (ऐतिहासिक अर्मेनिया) में रहा होगा जहाँ दजला और फरात नदी का उदगम था।[27] दूसरी तरफ यदि इस शब्द का अर्थ शाखाएं है तो यह वाटिका या तो दक्षिण इराक या फिर कुवैत, फारस की खाड़ी की उत्तर की ओर, स्थित रहा होगा (या फिर इन दोनों के मध्य, यह अनुमान लगाते हुए कि कालान्तर में जल स्तर बढ़ा होगा)। दूसरा मत के समर्थन में कि अदन की वाटिका फारस के खाड़ी के समीप स्थित रहा होगा, के लिए पर्याप्त प्रमाण उपलब्ध है।

आयतें 11, 12. उत्पत्ति के वृत्तांत में वर्णित **पहली** नदी की स्थिति को ठीक ठीक निर्धारित नहीं किया जा सकता है। इस नदी का नाम **पीशोन** था और **यह हवीला नामक** देश में **बहता** था **जहाँ सोना** मिलता था। सबसे बड़ी समस्या यह है कि पुराने नियम में कहीं भी इस नदी का वर्णन नहीं पाया जाता है और विद्वान इसके इब्रानी मूल से अधिक निश्चित नहीं हैं। कुछ इसे सिंधु नदी या फिर भारत के गंगा नदी से भी पहचानने का प्रयास करते हैं परंतु ये नदियां तो हिद्देकेल और फ़रात नदी से बहुत दूर हैं। कुछ इसे इरान के करून नदी से भी पहचानने का प्रयास करते हैं, जो फरात नदी में मिलती है, या फिर यह अरब की कोई अन्य नदी है, क्योंकि इसका संबंध हवीला देश से भी है जहाँ सोना भी मिलता है। हवीला, संसार के राष्ट्रों की सूची में उन लोगों के समूह से जुड़ा हुआ है जो अफ्रीका (10:6, 7) या अरब के क्षेत्र में बस गए थे (10:29; देखें 25:18)।

क्योंकि **सोना**, **मोती** और **सुलैमानी पत्थर** हवीला देश से संबंधित है और ये सभी सऊदी अरब के लाल समुद्र के तट पर पाए जाते हैं, इसलिए यह संदर्भ इस बात को दर्शाता है कि यह अरब देश का ही कोई क्षेत्र रहा होगा। वर्तमान का सबसे धनी सोने का खान सऊदी अरब के मदीना के निकट महद अध-धाहाब, जिसका अर्थ "सोने की पालना" है, में पाया जाता है। प्राचीन काल में भी इस क्षेत्र में पर्याप्त खदान किया गया था। संभवत: इसी क्षेत्र में ही पीशोन नदी का उदगम

था। उपग्रह से लिए गए तस्वीर से पता चलता है कि इस क्षेत्र में एक प्राचीन नदी का क्षेत्र रहा होगा जो "अरब के दक्षिण पूर्व में मदीना के निकट हिज़ाज पर्वत से निकलकर कुवैत की फारस की खाड़ी में हिद्देकेल और फारस नदी के मुहाने पर मिलती थी।"[28] यह सूखा नदी का क्षेत्र आंशिक रूप से रेत से दबा है और आंशिक रूप से दिखाई देता है, जो वादी अल-बातिन के नाम से भी जाना जाता है। यह कुवैत के नदी के नाम से भी जाना जाता है।

आयत 13. दूसरी नदी का नाम गीहोन है, यह वही है जो कूश के सारे देश को घेरे हुए है। इस नदी की वास्तविक स्थिति भी विवादित है क्योंकि गीहोन से संबंधित पुराने नियम की सभी संदर्भ ताज़े पानी का सोता को दर्शाता है जो दाऊद के नगर में किद्रोन घाटी से निकलती है। यह यरूशलेम का एकमात्र ताजे पानी का सोता था (1 राजा 1:33, 38, 45; 2 इतिहास 32:30; 33:14)। क्योंकि गीहोन नदी कुश देश के चारों तरफ बहता था, इसलिए हम इसे यरूशलेम के जल धाराओं के साथ इसकी पहचान नहीं कर सकते हैं।

कुछ विद्वान गीहोन को भारत या अफ्रीका की किसी नदी से पहचान करते हैं लेकिन यह संभावना विवादित है। जो लोग अदन की वाटिका की भौगोलिक परिस्थिति को तुर्की (ऐतिहासिक अर्मेनिया) निर्धारित करते हैं उनका मानना है कि गीहोन उसी क्षेत्र की कोई नदी होगी। इस नदी की पहचान की मुख्य समस्या यह है कि यह "कूश के देश" में है (2:13)। आमतौर पर पुराने नियम में विशेषकर भविष्यवक्ताओं के पुस्तक में "कूश" (כּוּשׁ, *Kush*) की पहचान इथियोपिया या उत्तरी नूबिया जो अफ्रीका का उत्तरी भाग है, के रूप में की गई है।[29] जबकि कूश, हाम के एक पुत्र में से एक था जो निमरोद का पिता भी था जिसका साम्राज्य शिनार देश में "बाबूल, एरेख, अक्काद और कालनेह" तक फैला हुआ था। वहाँ से वह "अश्शूर गया और वहाँ उसने निनवे की स्थापना की" और इसके साथ कई और दूसरे नगरों की भी स्थापना की (10:6-11)।

उत्पत्ति की वंशावली कूश के वंश के अफ्रीका, जो कि मिस्र के दक्षिण की ओर है, फैलने से पहले की परिस्थिति का वर्णन करती है - यह उस समय की बात है जब *कूश* मेसोपोटामिया घाटी के महान नगरों के नामों से जुड़ा था। इसलिए यह स्पष्ट है कि कभी कभी इब्रानी शब्द *कूश* अक्कादियन शब्द *काशशू* के समानांतर प्रयोग किया जाता है। यह उत्तरी मेसोपोटामिया के कास्सी की पहाड़ी भूमि का निर्धारण करता है जहाँ से होते हुए हिद्देकेल नदी बहती थी। आगे, कूश को कास्साइयों का पूर्वज भी संभवतः इसी लिए माना जाता होगा जिसने बाबुल में ई.पू. बारहवीं शताब्दी तक शासन किया।[30] गीहोन नदी कूश देश में बहती थी, जो पूरब से बहते हुए मेसोपोटामिया घाटी में बहती थी और हिद्देकेल नदी में मिल जाती थी। इस प्रकार की संभावनाएं सामरियों के पंचग्रंथ में भी जताई गई है जहाँ पर गीहोन के स्थान पर *आसकोप* का प्रयोग किया गया है जो खोएसपस नदी (वर्तमान नाम केरखा) का संदर्भ बताती है। यह हिद्देकेल नदी के पूरब की ओर बहती थी।[31]

आयत 14. अन्य बची दो नदियों की स्थिति स्पष्ट है। **तीसरी नदी** का नाम

हिद्देकेल था। हिद्देकेल का अँग्रेजी नाम Tigris *(टिगरीस)* यूनानी नाम Τίγρις, *टिगरीस* लिप्यंतरण है जो पुराने नियम का यूनानी अनुवाद में पाया जाता है; परंतु जैसे KJV में "Hiddekel" हिद्देकेल लिखा गया है वह इब्रानी חִדֶּקֶל (*हिद्देकेल* का) लिप्यंतरण है जो मेसोरिटीक मूलपाठ (MT) में अवतरित है। कुछ विद्वानों ने *हिद्देकेल* नदी का अश्शूर के पूर्व में बहने पर प्रश्न उठाए हैं क्योंकि यह नदी इस देश के बीचों बीच बहती थी। इसका एक विश्लेषण यह है कि इब्रानी नाम अश्शूर (אַשּׁוּר) को भिन्न भिन्न अनुवादों में भिन्न प्रकार से अनुवाद किया गया है (NEB; REB; NIV; NJPSV; NLT)। अतः यह नाम किसी देश या नगर को इंगित करता है। अश्शूर नगर प्राचीन अश्शूर देश का राजधानी था जो हिद्देकेल के पश्चिमी तट पर स्थित था। अतः यह मानना उचित होगा कि हिद्देकेल "आश्शूर देश के पूर्व में बहता था" (NIV)।

चौथी नदी का नाम फ़रात था। फ़रात, अँग्रेजी Euphrates यूनानी Εὐφράτης का लिप्यंतरण है जो पुराने नियम के यूनानी अनुवाद में पाया जाता है। इसका इब्रानी नाम פְּרָת *(पेरात)* है। फ़रात का वर्णन कई बार बाइबल में पाया जाता है। यह "बड़ी नदी" के नाम से भी प्रचलित है (उत्पत्ति. 15:18; व्यव. 1:7; यहोशु 1:4; प्रका. 9:14; 16:12) क्योंकि यह दक्षिण मध्य पूर्व एशिया की सबसे बड़ी नदी थी। कभी-कभी तो इसको केवल एक "नदी" करके भी संबोधित किया गया है (यहोशु 24:2, 3, 14, 15)। पश्चिम में फ़रात और पूर्व में हिद्देकेल ने "मेसोपोटामिया" को घेर रखा था।

वाटिका में मनुष्य की भूमिका (2:15-17)

**15तब यहोवा परमेश्वर ने आदम को ले कर अदन की वाटिका में रख दिया,
कि वह उस में काम करे और उसकी रक्षा करे, 16तब यहोवा परमेश्वर ने आदम
को यह आज्ञा दी, "कि तू वाटिका के सब वृक्षों का फल बिना खटके खा सकता है:
17पर भले या बुरे के ज्ञान का जो वृक्ष है, उसका फल तू कभी न खाना: क्योंकि
जिस दिन तू उसका फल खाए उसी दिन अवश्य मर जाएगा।"**

आयत 15. अदन की वाटिका कोई मिथ्यात्मक जादू नहीं है। वाटिका के पेड़ और पौधे अपनी देखभाल नहीं कर सकते थे और न ही मनुष्य चमत्कारी तरीके से उसकी देखभाल कर सकते थे। परमेश्वर कभी भी इस वाटिका को मनोरंजन का स्थल और कमाई का साधन नहीं बनाना चाहता था। न ही यह स्थल, बाबूल की सृष्टि की वृत्तांत के तरह है जहाँ मनुष्य को देवताओं के कार्य करने के लिए बनाया गया था जिससे कि उनको उनकी ज़िम्मेदारियों से छुटकारा मिल सके और तत्पश्चात् उन्हें कठिन परिश्रम न करना पड़े।[32] इसके विपरित, परमेश्वर मनुष्य पर निर्भर नहीं था - परंतु अदन की वाटिका मनुष्य पर निर्भर था। मनुष्य को भण्डारी के तरह वाटिका में कार्य करना था जो उसको सौंपा गया था। यह न केवल वाटिका की अच्छाई के लिए था बल्कि मनुष्य की मान्सिक तथा शारीरिक

स्वास्थ्य के लिए भी अच्छा था। इसलिए, मनुष्य के पाप में गिरने से पहले, **परमेश्वर ने मनुष्य को वाटिका में रखा ताकि वह उसमें खेती बाड़ी करे और उसकी देखभाल कर सके।**

खेती बाड़ी के लिए इब्रानी में עָבַד *(आबद)* शब्द का प्रयोग हुआ है जिसका अर्थ खेती करने के लिए "कार्य" या "सेवा" करना है (2:5; 3:23; 4:2, 12)। धार्मिक रीति से यह परमेश्वर की सेवा तथा आराधना के लिए भी प्रयोग हुआ है (निर्गमन 3:12; 4:23; 7:16; व्यव. 6:13; 10:12; 11:13; 13:4)। याजकों से संबंधित अनुच्छेदों में, यह क्रिया तथा इससे संबंधित संज्ञा, तंबू में लेवियों की आत्मिक सेवा का वर्णन करती है और बाद में यह मंदिर में आराधना के लिए प्रयोग होने लगा (निर्गमन 38:21; गिनती 3:7, 8; 4:23, 24, 26; 18:6; 1 इतिहास 24:3, 19; 2 इतिहास 8:14)।

उसी तरह, इब्रानी भाषा में रक्षा करने के लिए שָׁמַר *(शामर)* शब्द का प्रयोग हुआ है जिसका अर्थ है "रक्षा करना।" इस शब्द का प्रयोग इस प्रकार से भी किया जा सकता है जैसे जीवन के वृक्ष के मार्ग की रक्षा करना (3:24), भाई की खतरों से रक्षा करना (4:9) या फिर परभक्षी जानवरों से अपने पशुओं की रक्षा करना (30:31)।[33] सामान्यतया, इसका सबसे अधिक प्रयोग धार्मिक प्रथा, जैसे परमेश्वर की खतना की वाचा का पालन करना, जिसको उसने अब्राहम तथा उसके वंशजों से संबंधित किया था, में पाया जाता है (17:9, 10)।

परमेश्वर ने इस्राएल को उसकी विधि तथा आज्ञा का पालन करने का आदेश दिया था अर्थात उनका नैतिक जीवन शैली मिस्रियों तथा कनानियों से सर्वोच्च होना चाहिए था (लैव्य. 18:3-5)। लेवियों को तंबू की रख रखाव और देखभाल (गिनती 3:8) के साथ साथ उन्हें इसे घुसपैठियों से बचाने के लिए विशेष अधिकार प्राप्त था (गिनती 1:51-53)।

आयत 15. में प्रयुक्त शब्द विरोधाभास बन जाता है क्योंकि यहाँ इब्रानी शब्द נוּחַ *(नुवाक)* प्रयोग किया गया है जिसका तात्पर्य है "आराम"[34] और क्रिया *नुवाक* कारणचक शब्दरूप है, जिसका शाब्दिक अर्थ परमेश्वर ने "मनुष्य को आराम करने दिया" है जब उसने मनुष्य को वाटिका में कार्य करने दिया। यह ठीक उसी प्रकार का विरोधाभास है जो हमें निर्गमन 20:10, 11, में मिलता है जहाँ परमेश्वर ने इस्राएलियों को सब्त के दिन किसी भी प्रकार का कार्य करने से मना किया था। बल्कि, उन्हें तो परमेश्वर का अनुसरण करना चाहिए था, जिन्होंने सृष्टि के छ: दिन कार्य करने के पश्चात विश्राम *(नुवाक)* किया था। स्पष्ट रूप से परमेश्वर नहीं चाहता था कि सब्त के दिन इस्राएल अपने सभी कार्यों से रुक जाएं जैसा कि उसने स्वयं किया। जब लोगों ने यीशु पर एक लंगड़ा व्यक्ति को सब्त के दिन चंगा करने का आरोप लगाया तब उसने कहा, "मेरा पिता अब तक काम करता है, और मैं भी काम करता हूं" (यूहन्ना 5:17)। यीशु ने जो बात यहाँ स्पष्ट की है वह यह है कि परमेश्वर कार्य करता रहता है, सब्त के दिन भी, जिससे कि उसकी सृष्टि बनी रहे, लोगों के जीवन को आशीषित करता है और उनके प्रार्थनाओं का उत्तर देता है। इसलिए यीशु ने भी सातवें दिन चंगा करने का

अच्छा कार्य जारी रखा है जिससे परमेश्वर की महिमा होती है।

यही सिद्धान्त मूसा की व्यवस्था में भी पाया जाता है। परमेश्वर के लोगों को (मूलत: अपने लिए) कार्य करने से विश्राम करना चाहिए था ताकि वे सब्त के दिन और अधिक फसल न उगा सकें, और अधिक धन दौलत न कमा सकें और व्यापार के द्वारा और अधिक मुनाफा न कमा सकें (देखें निर्गमन 31:13-17; नहेम्य. 13:15-18; यशायाह 58:13, 14; आमोस 8:4-6)। जबकि उन्हें ऐसा कार्य करते रहना चाहिए जिससे दूसरों के जीवन को आशीष मिले और परमेश्वर की महिमा करें जैसा कि यीशु ने अपने जीवन से इसका प्रदर्शन किया है। उत्पत्ति की पुस्तक यह सलाह देता है कि कार्य न केवल परमेश्वर के द्वारा मनुष्य के लिए ठहराया गया है, परंतु मनुष्य, जानवरों के विपरीत, रचनात्मक और लाभदायक गतिविधि से जो मनुष्य जाति के लिए आशीष का कारण हो से विश्राम करे (अर्थात उसको शान्ति, तृप्ति और अच्छा स्वास्थ्य का अनुभूति हो)।

आयतें 16, 17. अदन की वाटिका में जीवन की कहानी जारी रहती है और लेखक मनुष्य के लिए परमेश्वर की बहुतायत के दानों का विवरण करता है। परमेश्वर की आज्ञा अनुमति और निषेध आज्ञा दोनों की थी। आयत 2:9 में इस बात का ज़िक्र है कि वाटिका में ऐसे पेड़ थे जो मन को भाने वाले और खाने में अच्छे थे, विशेषकर "जीवन का वृक्ष।" परमेश्वर ने उदारता से इस बात को बार-बार कहा कि आदम वाटिका के **किसी भी वृक्ष में से खा सकता है;** परन्तु, उसने उसी समय यह भी कहा कि वह भले और **बुरे के ज्ञान के वृक्ष** में से नहीं खा सकता। हालाँकि मनुष्य के लिए वाटिका में स्वतंत्रता थी, पर बिना निषेध आज्ञा के स्वतंत्रता का कोई महत्व नहीं। सृजनहार-के रूप में नहीं बल्कि सृष्टि की एक रचना के रूप मनुष्य को यह पहचानना था-कि वह सीमित था। फिर भी जो सीमाएं परमेश्वर ने मनुष्य पर रखी थीं वे बहुत बड़ी नहीं थीं, क्योंकि उसने उसे केवल एक ही वृक्ष अर्थात अच्छे और बुरे के ज्ञान के वृक्ष से खाने के लिए मना किया था।

यहाँ एक ध्यान देने योग्य बात यह है कि परमेश्वर ने मनुष्य को व्यक्तिगत रूप से सम्बोधित किया। मनुष्य को परमेश्वर की वाणी को सुनने का सौभाग्य प्राप्त था, जो जानवरों को प्राप्त नहीं था। केवल उसी को परमेश्वर के स्वरूप में रचा गया था और वही अपने सृष्टिकर्ता के साथ संगति का आनंद ले सकता था, लेकिन केवल उसी के पास यह विकल्प भी था कि वह परमेश्वर की आज्ञा को माने या न माने। भाषा एक आज्ञा के रूप में थी; क्योंकि विषय यह था कि क्या मनुष्य तब भी परमेश्वर पर भरोसा करेगा, जब उसकी आज्ञा का कोई अर्थ नज़र नहीं आता (3:6)।

निषेध आज्ञा सीधी और स्पष्ट थी: **"उसका फल तू कभी न खाना।"** यहाँ इब्रानी में जिस वाक्य रचना का इस्तेमाल किया गया है, जो नकारात्मक אל *(लो)* से शुरू होता है, उसे बाद में दस आज्ञाओं (निर्गमन 20:1-17) में भी हम पा सकते हैं। NIV में "उसका फल तू कभी न खाना" को "You must not eat" में अनुवाद किया है।

कारण सूचक क्योंकि כִּי *(कि,* "for"*)* अनाज्ञाकारिता के परिणाम को बताता है: **"क्योंकि जिस दिन तू उसका फल खाए उसी दिन अवश्य मर जाएगा।"** इस दिव्य चेतावनी का अनुवाद करना कठिन है क्योंकि मनुष्य *उसी दिन* नहीं मरा जिस दिन उसने उस वर्जित वृक्ष के फल को खाया था। इसका एक प्रस्तावित स्पष्टीकरण यह है, कि बाइबल में कहा है कि परमेश्वर के लिए एक दिन हज़ार सालों के समान है (2 पतरस 3:8; देखें भजन 90:4), परमेश्वर का अर्थ यह हुआ कि इससे पहले उसकी उम्र हज़ार साल की हो वह मर जाएगा - और यकीनन, वह मरा। लेकिन यह निरर्थक प्रतीत होती है और इसे माना नहीं जा सकता।

एक दूसरा विचार यह है, जो पहले के ही समान है, कि दिन शब्द को रूपक की तरह समझा जाना चाहिए न कि 24 घंटे के दिन के रूप में। "जिस दिन" בְּיוֹם *(बेयोम)* की वही अभिव्यक्ति है जो 2:4 में भी है, जहां सृष्टि के छः दिनों का ज़िक्र किया गया है (2:4 पर टिप्पणी देखें)। परन्तु, ऐसा नहीं लगता कि इस शब्द का अर्थ सैकड़ों वर्षों के लिए किया गया होगा।

इसका तीसरा स्पष्टीकरण यह है कि परमेश्वर मनुष्य को यह चेतावनी दे रहा था कि जिस दिन वह इस वर्जित वृक्ष के फल को खाएगा, वह नश्वर हो जाएगा। यह दृष्टिकोण इस विचार पर केन्द्रित है कि परमेश्वर ने मनुष्य को अनश्वर बनाया, जबकि वचनों में इसके बारे में कुछ नहीं कहा गया। मनुष्य ने परमेश्वर से अपना जीवन पाया, और उस जीवन का जारी रहना उसके जीवन के वृक्ष के फल को खाने पर निर्भर था। अब जब वह मनुष्य के उपलब्ध नहीं था तो उसका परिणाम मृत्यु था। इसके अलावा, 1 तीमुथियुस 6:16 के अनुसार अमरता केवल परमेश्वर का विशेष गुण है।

उस दिन के विषय में जब उन्होंने फल खाया, चौथा स्पष्टीकरण यह है कि "उनकी नियति मृत्यु होगी"[35] या वे किसी ने किसी दिन अवश्य मरेंगे (NIV)। दूसरे शब्दों में, ये तुरंत मृत्यु की चेतावनी नहीं,बल्कि इस बात की चेतावनी था कि परमेश्वर की अनाज्ञाकारिता का "परिणाम मृत्यु" है।[36] आदम और हव्वा की ऐसी समझ नहीं थी, क्योंकि सांप ने इसके विपरीत स्त्री से कहा, "तुम निश्चय न मरोगे! वरन् परमेश्वर आप जानता है कि जिस दिन तुम उसका फल खाओगे उसी दिन तुम्हारी आँखें खुल जाएँगी, और तुम भले बुरे का ज्ञान पाकर परमेश्वर के तुल्य हो जाओगे।" (3:4, 5)। उस "दिन" उसे खाकर मरने की बजाय, उनकी आँखें खुल गईं, और उन्हें भले और बुरे का ज्ञान हो गया (3:22)। डर और प्रतिज्ञा दोनों का उस "दिन" पूरी होने की आशा थी, न कि के सैकड़ों वर्षों के बाद।

पांचवां विचार यह है कि आदम और हव्वा ने जब उस वर्जित फल को खाया तो उनकी आत्मिक मृत्यु हो गई क्योंकि उनका परमेश्वर से अलगाव हो गया। हालाँकि यह कुछ हद तक सच भी हो सकता है, लेकिन उत्पत्ति का सन्दर्भ यह नहीं कहता। वचन यह नहीं कहता कि वे वाटिका से निकाल दिए जाने के बाद भी आत्मिक मृत्यु की स्थिति में बने रहे; जीवन के वृक्ष से अलगाव का अर्थ उनकी भौतिक मृत्यु थी (3:22, 24)। पाप का परिणाम जो आदम और हव्वा के साथ जीवन भर रहा वह भौतिक था: स्त्री के प्रसव काल में अतिरिक्त पीड़ा, आदमी के

लिए कठिन परिश्रम के बाद भूमि से उपज प्राप्त करना, और अंत में दोनों के लिए शारीरिक मृत्यु। पौलुस भी इसी प्रकार प्रथम पाप के विषय में कहता है: "इसलिये जैसा एक मनुष्य के द्वारा पाप जगत में आया और पाप के द्वारा मृत्यु आई, और इस रीति से मृत्यु सब मनुष्यों में फैल गई, क्योंकि सब ने पाप किया" (रोमि. 5:12)।

अंतिम सम्भावना, जिसमें बहुत कम कठिनाइयाँ हैं, वह यह है कि परमेश्वर ने मनुष्य को चिताया था कि उस पर शारीरिक मृत्यु उसी दिन आ जाएगी जब वह उस वर्जित वृक्ष का फल खाएगा। हमें यह स्मरण रखना है कि वाटिका में दो विशेष पेड़ थे: पहला, जीवन का वृक्ष, जो आत्मिक जीवन नहीं बल्कि मनुष्य को तब तक शारीरिक जीवन प्रदान करता था जब तक वह वहां था। इसी प्रकार, दूसरा वृक्ष, जो भले और बुरे के ज्ञान का वृक्ष था, उसने मनुष्य के आत्मिक जीवन को नष्ट नहीं किया क्योंकि परमेश्वर के समक्ष पापों को मानने और मन फिराने से उसे नवीकृत किया जा सकता था। जो उसने किया वह यह था कि इसके कारण आदम और हव्वा की पहुँच से जीवन के वृक्ष बाहर हो गया; और परिणामस्वरूप उन पर शारीरिक मृत्यु आई और साथ से सम्पूर्ण मानवजाति पर भी आई।

समस्या अब भी है क्योंकि शारीरिक मृत्यु आदम और हव्वा पर उस दिन नहीं आई जब उन्होंने उस वृक्ष का फल खाया था। इसके विपरीत, आदम उसके बाद कई सौ साल रहा और फिर मर गया। हमें यह नहीं समझना चाहिए कि परमेश्वर ने जो कहा उसने वह नहीं किया या यह कि वह अपनी चेतावनी के अनुसार दंड देना नहीं चाहता था। इसका अर्थ यह है कि हम यहाँ न्याय में अनुग्रह का पहला बाइबलीय उदाहरण देखते हैं। मनुष्य को उस दिन मर जाना था; लेकिन परमेश्वर ने अपनी दया में उसे जीने दिया - हालाँकि वह जीवन मृत्यु की छाया में था। मनुष्य यह सोचकर स्वतंत्रता से पाप नहीं कर सकता कि परमेश्वर हमेशा उसे दंड से बचाएगा। दूसरी ओर, यह घटना आशा भी देती है। हम जानते हैं कि "पाप की मज़दूरी तो मृत्यु है" और हम सब पर मृत्यु है, पर परमेश्वर हमें इसलिए जीने देता है क्योंकि वह "वह [हमारे] विषय में धीरज धरता है, और नहीं चाहता कि कोई नष्ट हो, वरन् यह कि सब को मन फिराव का अवसर मिले" (2 पतरस 3:9)।

जानवरों में आदम के लिए कोई योग्य सहायक नहीं (2:18-20)

18फिर यहोवा परमेश्वर ने कहा, "आदम का अकेला रहना अच्छा नहीं; मै उसके लिये एक ऐसा सहायक बनाऊँगा जो उस से मेल खाए।" 19और यहोवा परमेश्वर भूमि में से सब जाति के बनैले पशुओं, और आकाश के सब भाँति के पक्षियों को रचकर आदम के पास ले आया कि देखे कि वह उनका क्या क्या नाम रखता है; और जिस जिस जीवित प्राणी का जो जो नाम आदम ने रखा वही उसका नाम हो गया। 20अतः आदम ने सब जाति के घरेलू पशुओं, और आकाश के पक्षियों, और सब जाति के बनैले पशुओं के नाम रखे; परन्तु आदम के लिये कोई

ऐसा सहायक न मिला जो उस से मेल खा सके।

आयत 18. अपनी पहली घोषणाओं के विपरीत - जो सब सृष्टि के "अच्छा" या "बहुत अच्छा" होने के सकारात्मक टिप्पणियां थीं - इस समय, **परमेश्वर** कहता है, **"आदम का अकेला रहना अच्छा नहीं; मै उसके लिये एक ऐसा सहायक बनाऊँगा जो उस से मेल खाए।"** जैसे 1:27 में मनुष्य की सृष्टि से पहले एक दिव्य कथन था, "हम मनुष्य को ... बनाएं" (1:26), वैसे ही स्त्री को रचने से पहले परमेश्वर ने विचार किया कि आदम का अकेला रहना अच्छा नहीं। इसलिए उसने उसके लिए एक सहायक बनाने का फ़ैसला किया। स्त्री को 1:27 में बनाने के बाद परमेश्वर ने सारी सृष्टि पर दृष्टि डाली और 1:31 में कहा, "वह बहुत ही अच्छा है।"

परमेश्वर का कहना कि मनुष्य का अकेला रहना सही नहीं पाठक को साथी की ज़रूरत के लिए चौकस कर देता है। क्योंकि "कोई मनुष्य अकेला नहीं,"[37] परमेश्वर ने उसके लिए एक सहायक बनाई जो उससे मेल खाती हो। कुछ लोग "सहायक" शब्द को निम्न रूप से देखते हैं और स्त्री को पुरुष से हीन मानते हैं। उनके लिए, यह शब्द ऐसा है मानो स्त्री एक दासी के रूप में है जो विभिन्न घरेलू काम करती है। इससे एक और चित्र सामने है जो एक सीखने वाले अकुशल कारीगर का है, वह किसी कुशल बिजली कारीगर, बढ़ई या प्लम्बर के पास उसकी सहायता करने के लिए जाता है। उस अनाड़ी कारीगर को करने के लिए कुछ अकुशल काम दिया जाता है, लेकिन उसे ज्यादा दक्ष कार्य सौंपने के लिए आवश्यक प्रशिक्षण और अनुभव प्राप्त नहीं होता।

बाइबल में सहायक शब्द עֵזֶר *(एज़ेर)* का प्रयोग इन विचारों से बिलकुल अलग है। मूल रूप से इसका अर्थ है जो कोई किसी व्यक्ति, समूह, या जाति की कुछ ऐसा काम करने में सहायता करे जिसे अकेले नहीं किया जा सकता। इसमें "विषय और विषयवस्तु के सहयोग और क्रिया है जब एक का सामर्थ्य पर्याप्त नहीं है।"[38] अकसर सहायक उससे श्रेष्ठ होता है जिसकी सहायता की जाती है, जैसे यहूदा के समान कमज़ोर देश ने बेबीलोन से युद्ध के समय मिस्र से सहायता मांगी (यशा. 31:1-3)। सहायता करनेवाले की उस पर श्रेष्ठता जिसकी सहायता की जाती है, पुराने नियम में लगभग चालीस बार आया है, जहाँ परमेश्वर को अपने लोगों के एक "सहायक" *(एज़ेर)* के रूप में दर्शाया गया है (देखें निर्गमन 18:4; व्यव. 33:26; 1 इतिहास 12:18; 2 इतिहास 26:7; भजन 10:14; 46:5; 54:4; 79:9; 119:173; यशा. 41:10, 13, 14; 44:2; 49:8)।[39] किसी भी तरह से परमेश्वर को मनुष्य से हीन नहीं समझा जा सकता क्योंकि परमेश्वर उन लोगों की सहायता करने, छुड़ाने, और बचाने के लिए आता है जो उस पर भरोसा करते हैं और जो आवश्यकता के समय उसे पुकारते हैं।

स्त्री जो पुरुष की सहायक है वह न तो उससे श्रेष्ठ है और न हीन; बल्कि उसे उसका साथी होना है और उसके साथ जीवन जीने में बराबर का सहयोग करना है। एक स्त्री और पुरुष के अलग अलग स्वभाव हैं और वे विवाह में अलग अलग

वरदानों और विशेषताओं को लाते हैं; लेकिन उनके अलग अलग भूमिकाएं एक दूसरे की पूरक हैं, वे उन बातों को पूरा करते हैं जिसकी दूसरे व्यक्ति में कमी है और जिस क्षेत्र में कोई कमज़ोर है उसे मजबूत करते हैं। इसका परिणाम यह होता है कि विवाह में दूसरे के गुण और योग्यताओं के द्वारा प्रत्येक एक बेहतर मनुष्य बनता है। निश्चय ही, उत्पत्ति का लेखक केवल स्त्री को रचने के विषय में बता रहा था, जिसे पुरुष की सहायक होना था; लेकिन यह नियम हर पति-पत्नी के सम्बन्ध पर लागू होता है (मत्ती 19:3-6; इफि. 5:25-33; 1 पतरस 3:1-7)।

पुरुष की सहायक होने के अलावा, स्त्री की स्थिति को आगे पुरुष के साथ "मेल खानेवाली" נֶגֶד *(नेगेद)*, या शाब्दिक "सामने" के रूप में परिभाषित किया गया है। इस शब्द का अभिप्राय "प्रथम स्थान" या "विशिष्ट होने" से है; लेकिन 2:18, 20 से यह ज्ञात होता है की उसका सम्बन्ध पुरुष से है।[40] इब्रानी में इस शब्द में उपसर्ग जुड़ा है जिसका शाब्दिक अर्थ यह कि स्त्री "उसके विपरीत" के समान है।[41] दूसरे शब्दों में, उसे ऐसा कोई और नहीं चाहिए जो बिलकुल उसी की तरह हो, बल्कि ऐसा जो कुछ तरह से उसके समान हो और कुछ तरह से उसके असमान हो। पुरुष को अपने दैनिक काम-काज में सहायता करने और बच्चे पैदा करने वाली से भी अधिक कुछ चाहिए। हालाँकि इन भूमिकाओं को शामिल किया जा सकता है, लेकिन उसे अपने विपरीत लिंग से आपसी आत्मिक, मनोवैज्ञानिक, और शारीरिक सहयोग की भी ज़रूरत होती है जो केवल पत्नी के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध से ही आ सकता है।[42] यह पर्याप्त नहीं है कि परमेश्वर ने आदमी के रहने के लिए एक सिद्ध वातावरण बनाया या यह कि उसने उसे अपने सृष्टिकर्ता के साथ संगति के लिए सृजा; परमेश्वर ने मनुष्य को एक सामाजिक प्राणी बनाया ताकि वह अन्य मनुष्यों के साथ सम्बन्ध रख सके, विशेषकर अपनी पत्नी के साथ। जब परमेश्वर ने देखा कि आदमी का अकेलापन अच्छा नहीं है, तो वह मूल रूप से यह कह रहा था कि मनुष्य स्वयं अपने आपसे उन्नत स्तर पर नहीं पहुँच सकता।[43]

आयत 19. भूमि के **सब जाति के बनैले पशुओं, और आकाश के सब भाँति के पक्षियों** के साथ संबंध आगे बताया गया है। कुछ लोग इसे 1:20-25 के विरोधाभास के रूप में देखते हैं जहाँ परमेश्वर ने मनुष्य को रचने से पहले इन जंतुओं को रचा। परन्तु, जैसा हमने पहले देखा है कि पहला अध्याय सृष्टि का क्रमानुसार वर्णन करता है जबकि दूसरा अध्याय अधिक विषयात्मक तथा धर्मवैज्ञानिक है, जो केवल इस बात को ही प्रकट नहीं करता है कि परमेश्वर ने सृष्टि के क्या किया बल्कि उसने यह सब क्यों और कैसे किया। यहां यह दिखाया गया है कि परमेश्वर ने उनकी प्रकृति के अनुसार पशुओं से अधिक मनुष्यों के साथ व्यक्तिगत तथा घनिष्ठ संबंध स्थापित किया (2:7-9, 15-17)। इसके बाद लेखक इस बात को प्रकट करता है कि यह बात पुरुष और स्त्री के सम्बन्ध में भी सच है, जिसे परमेश्वर ने ऐसा घनिष्ठ रखा जैसा मनुष्य और पशुओं के बीच कभी हो नहीं सकता (2:18-25)।

पहले यह वृत्तान्त मनुष्य की सृष्टि तथा निम्न प्राणियों के मध्य समानता

दिखाती है। **परमेश्वर** ने दोनों को अर्थात मनुष्य तथा जानवरों को **धरती** की मिट्टी से **बनाया** और दोनों **जीवित प्राणी** कहलाए (2:7, 19)। बावजूद इसके कि परमेश्वर ने मनुष्य के लिए एक सहयोगी की ज़रूरत देखी, फिर भी उसने उससे मेल खाने वाले सहयोगी की सृष्टि करने में देरी की। इसके बजाय परमेश्वर जानवरों और पक्षियों को उसके सम्मुख लाया कि देखें वह उनका क्या नाम रखता है। **जो भी मनुष्य ने कहा वही उनका नाम पड़ गया।** इसके द्वारा मनुष्य उस ईश्वरीय योजना को पूर्ण करने लगा जो 1:26, 28 में कहा गया कि वह उन पर प्रभुता करे। एक अधिकार की स्थिति से उसने उन सब का नामकरण किया।

आयत 20. कहानी जैसे जैसे बढ़ती है उससे यह स्पष्ट हो जाता है कि जबकि परमेश्वर ने दोनों को अर्थात **मनुष्य** तथा जानवरों को धरती की मिट्टी से बनाया, तौभी उनके बीच एक गुणात्मक अन्तर पाया जाता है जिसे मनुष्य ने स्वयं स्वीकार किया। जैसे जब उसने हर एक जानवर पर दृष्टि की और उनका नामकरण किया, तो उसने उनमें अपने लिए कोई सहयोगी भी ढूंढा होगा जो उससे मेल खाता हो। हालांकि वह जानवरों से घिरा हुआ था फिर भी वह अकेलापन अनुभव करने लगा। समस्या यह थी कि वह अकेला इसलिए था क्योंकि **कोई ऐसा सहायक न मिला जो उससे मेल खा सके**, कोई भी ऐसा नहीं मिला जिसके साथ वह अपनी जीवन की गूढ़ बातों को बांट सके।

आदमी के लिए स्त्री की सृष्टि (2:21-25)

[21]तब यहोवा परमेश्वर ने आदम को भारी नींद में डाल दिया, और जब वह सो गया तब उसने उसकी एक पसली निकालकर उसकी जगह मांस भर दिया। [22]और यहोवा परमेश्वर ने उस पसली को जो उसने आदम में से निकाली थी, स्त्री बना दिया; और उसको आदम के पास ले आया। [23]और आदम ने कहा, अब यह मेरी हड्डियों में की हड्डी और मेरे मांस में का मांस है सो इसका नाम नारी होगा, क्योंकि यह नर में से निकाली गई है। [24]इस कारण पुरूष अपने माता पिता को छोड़कर अपनी पत्नी से मिला रहेगा और वे एक तन बने रहेंगे। [25]और आदम और उसकी पत्नी दोनों नंगे थे, पर लजाते न थे।

आयत 21. प्राचीन मध्य पूर्व की कोई भी परंपरा स्त्री की सृष्टि का वृतांत नहीं बताती है। केवल बाइबल के वृतांत में ही यह पाया जाता है कि वह न केवल पुरुष से मेल खाती है बल्कि 1:27 में यह भी कहा गया कि परमेश्वर ने नर और नारी की सृष्टि अपने ही स्वरूप में की और इसके लिए वचन हमें यह बताता है कि परमेश्वर ने उनकी सृष्टि किस क्रम और किन प्रक्रियाओं के द्वारा की। लेखक हमें यह बताता है कि **परमेश्वर** ने मनुष्य को धरती की मिट्टी से बनाया और तब उसने उसे **भारी नींद में डाल दिया**। यहाँ पर भारी नींद के लिए תַּרְדֵּמָה *(थारदेमाह)* शब्द का प्रयोग हुआ है।[44] कभी कभी इस प्रकार की नींद परमेश्वर ही डालता है (1 शमूएल 26:12; यशा. 29:10); जो उसके ईश्वरीय उद्देश्य को

पूरा करने के लिए होता है (उत्पत्ति 15:12) या फिर रात में दर्शन देखने के लिए होता है (अय्यूब 4:13; 33:15)। यहाँ पर मनुष्य का शल्य क्रिया करने के उद्देश्य से **उसे भारी नींद में डाल दिया** गया है जिसमें परमेश्वर ने **उसकी एक पसली निकालकर** उससे एक स्त्री की सृष्टि की (2:22)।

पसली के लिए इब्रानी शब्द צֵלָע *(ट्सेला)* प्रयोग किया गया है जिसका अर्थ "एक तरफ़" या "किनारे" है। इसका किसी भी चीज़ के लिए प्रयोग किया जा सकता है जैसे पहाड़ के किनारे, एक भवन के किनारे, एक कमरे के किनारे, मंदिर के किनारे या फिर किसी फर्नीचर के किनारे।[45] सत्य तो यह है कि उत्पत्ति 2:21, 22 ही केवल एक मात्र पुराने नियम में हवाला है जहाँ पर "पसली" शब्द का प्रयोग हुआ है। अधिकांश अंग्रेज़ी अनुवादों में इसी शब्द का प्रयोग किया गया है।

"उसने उसकी एक पसली ली," की बजाय NIV अपने फुटनोट में *(ट्सेला)* शब्द के प्रयोग का विकल्प पद देता है "[परमेश्वर] ने मनुष्य के *किनारे* का हिस्सा लिया" (जोर दिया गया)। यह अनुवाद मनुष्य का शल्य चिकित्सा में से होश में आने की प्रक्रिया को दर्शाता है। जब परमेश्वर नारी को उसके पास लाया, तो वह तुरंत भौंचक्के होकर बोला, "यह मेरी हड्डी में की हड्डी और मांस में का मांस है" (2:23), जो यह दिखाता है कि उसका मांस और हड्डी निकालकर उससे नारी की रचना की गई थी।

कुछ प्राचीन रब्बियों ने सिखाया कि प्रथम मनुष्य (आदम) एन्ड्रोजीनस था अर्थात जिसमें स्त्री तथा पुरूष दोनों के गुण पाए जाते थे। वे इस निष्कर्ष पर उत्पत्ति 5:1, 2 के आधार पर आए, जहाँ लिखा गया है, "आदम की वंशावली यह है। जब परमेश्वर ने मनुष्य की सृष्टि की तब अपने ही स्वरूप में उसको बनाया; उसने नर और नारी करके मनुष्यों की सृष्टि की और उन्हें आशीष दी, और उनकी सृष्टि के दिन उनका नाम אָדָם *[आदम]* रखा।" पिछले दशकों में समकालीन महिला धर्मविज्ञानियों ने रब्बियों के इस विचार धारा को 2:21, 22 से जोड़ा। उन्होंने दावा किया है कि मूल में नर और नारी के लिए "आदम" ("मनुष्य") शब्द का प्रयोग हुआ था।

जबकि 1:27, 28 से जो 5:2 की वंशावली का आधार है, यह स्पष्ट है कि उन वचनों में दो व्यक्ति दर्शाए गए हैं न कि दोहरे लैंगिक गुण वाला एक व्यक्ति। इससे बढ़कर 1:27 में "उनके" का प्रयोग दो व्यक्तियों के लिए किया गया है जो नर और नारी में अंतर प्रकट करता है और यह "उसका" (पुल्लिंग) के विपरीत है। इस वृतांत में कहीं भी ऐसा नहीं है जो यह बताए कि प्रथम पुरुष शारीरिक रूप से द्विलैंगिक था।[46] वास्तव में, इब्रानी शब्द जो 1:26, 27 और 5:2 में प्रयोग किया गया है उसका सामान्य अर्थ "मानव जाति" से है और यह दोनों नर तथा नारी के लिए प्रयोग किया गया है। यह 3:17 में पहली बार नारी जो "हव्वा" (3:20) कहलायी, के विपरीत "आदम" के लिए नर के रूप में व्यक्तिगत नाम से प्रयोग किया गया है।

आयत 22. इस वर्णन में बताया गया है कि **यहोवा परमेश्वर ने उस पसली को जो उसने आदम में से निकाली थी, स्त्री बना दिया।** इब्रानी भाषा में "बना

दिया" בָּנָה *(बानाह)* का शाब्दिक अर्थ "बनाना" होता है और इस शब्द में परमेश्वर मुख्य कारीगर है, कर्ता के रुप में प्रयोग हुआ है जिसने नारी को बनाया। अन्य स्थानों में परमेश्वर ने कई अन्य चीज़ों का निर्माण किया जैसे "दाऊद का झोपड़ी" जो गिर गई थी (आमोस 9:11), "घर" (परिवार और बच्चे) (भजन 127:1, 3-5) और "अपना पवित्र स्थान" (भजन 78:69)।[47] जब लेखक ने 1:26, 27 में मनुष्य (नर और नारी) की सृष्टि का वर्णन किया तब उसने בָּרָא *(बारा)* और עָשָׂה *(असाह)* क्रिया का प्रयोग किया है। यहाँ, नारी को बनाने के संबंध में, लेखक ने परमेश्वर को एक निपुण कारीगर के रूप में दर्शाया है। क्रिया *बानाह* का अभिप्राय ईश्वरीय कार्य के फल - नारी - से है जो "सुन्दरता, स्थिरता और टिकाव" की प्रतीक है।[48]

जब परमेश्वर नारी को **आदम के पास लाया** तो वह "जोड़े बनाने वाले" की भूमिका निभा रहा था या फिर उस दुल्हन के पिता की भूमिका निभा रहा था जो अपनी बेटी को उसके होने वाले दुल्हे के पास ला रहा था। यह प्राचीन बापदादों के समाज की परंपरा थी जहाँ अधिकांश विवाह पारिवारिक सहमति से तय किए जाते थे। चूंकि परमेश्वर ने नर और नारी दोनों को बनाया था इसलिए वह जानता था कि मनुष्य को किस प्रकार की सहयोगी की आवश्यकता थी। परंतु जब वह उसे आदम के पास लाया तो उसने आदम को यह जानने दिया कि यह ईश्वरीय दान उसके लिए कितना अद्‌भुत है।

आयत 23. जब **मनुष्य** की अपनी सहयोगी और साथी से मुलाकात हुई तो उसे त्वरित तथा अवर्णनीय आनंद की अनुभूति हुई। उसका उत्साह कविता की पंक्तियों के रुप में बह निकला[49], **"यह मेरी हड्डियों में की हड्डी और मेरे मांस में का मांस है।"** यहाँ पर NRSV में "अब" के स्थान "अन्त में" या "अन्तत": शब्द का प्रयोग किया गया है। अन्ततः परमेश्वर ने मनुष्य की जो जरुरत थी उसको पूरा कर दिया था। उत्साह से भरकर मनुष्य ने हव्वा के लिए "यह" शब्द तीन बार स्त्रीलिंग में प्रयोग किया हैः **यह** זֹאת *[जॉथ]* **मेरी हड्डियों में की हड्डी है; सो इसका [यह] नाम नारी होगा ... यह नर में से निकली है।** पुरुष को अन्ततः अपना सच्चा "जीवन साथी" मिल गया था।

आदम का वक्तव्य कि यह मेरे हड्डी में की हड्डी और मांस में का मांस है, इब्रानियों के बीच सगे संबंधियों के लिए प्रयोग होनेवाले शब्द के समान है (29:14; न्यायियों 9:1, 2; 2 शमूएल 19:12, 13)। कुछ संदर्भों में यह सत्यनिष्ठा को भी प्रकट करता है (2 शमूएल 5:1-3; 1 इतिहास 11:1)।

मनुष्य के आनंद का अन्तिम भाग शब्दों का खेल है: "इसका नाम नारी אִשָּׁה *[इश्शाह]* होगा, क्योंकि यह नर אִישׁ *[इश]* में से निकाली गई है।" यहाँ दोनों इब्रानी शब्दों का निश्चित शब्द उद्भव नहीं है किन्तु श्लेष एक जैसा कार्य करने के कारण उनका उच्चारण एक ही जैसा है। जानवरों को देखने तथा उनका नामकरण करने के बाद मनुष्य को यह ज्ञात हुआ कि वह (मनुष्य होने के कारण) उनसे कितना भिन्न है। जब परमेश्वर नारी को उसके सम्मुख लाया तब उसे ज्ञात हुआ कि वह पहली बार किसी ऐसे प्राणी के सम्मुख खड़ा था जो स्वभाव में उसके

समान थी - लेकिन लैंगिक रुप से वह उससे भिन्न थी।[50] इसलिए उसने उसे "*[इश्शाह]* अर्थात नारी कहा क्योंकि वह *[इश]* अर्थात मनुष्य में से निकाली गई थी।" दूसरे शब्दों में मनुष्य ने अपने तथा स्त्री मध्य समानता देखी और इसके साथ ही उसने अपने में और उसमें एक भिन्नता को भी देखा, इसलिए उसने दो शब्दों *इश* और *इश्शाह* का प्रयोग किया जो इस भिन्नता को प्रकट करती है।

क्योंकि नारी, नर में से निकाली गई थी इसलिए संभवतः यह वृतांत ऐसा वर्णन करता है कि अपने जीवन के अधिकांश समय वह नर पर ही निर्भर रहती थी; और यह भी कि जिस प्रकार उसने पक्षियों और जानवरों का नामकरण किया था, उसने उसका भी नामकरण किया तो यह उसके ऊपर अधिकार भी दर्शाता था (2:19, 20)। परंतु पति का अपनी पत्नी पर प्रभुता और उसका अपने पति के आधीन होना यह नहीं दर्शाता है कि उस का पति उसका दुरुपयोग करे या उसका निरादर करे। इसके विपरीत, पौलुस ने नए नियम (1 कुरि. 11:3, 8-12; इफि. 5:22-23) में इसका अनुवाद इस प्रकार किया कि पति का अपने पत्नी के प्रति प्रभुता ठीक उसी प्रकार होना चाहिए जिस प्रकार मसीह का कलीसिया के प्रति है: जैसे प्रेम करना, देखभाल करना और उसके लिए कुछ भी बलिदान करना। दूसरे शब्दों में, वह उसके लिए कुछ भी करने के लिए तैयार रहे - यहाँ तक कि उसकी खुशहाली के लिए अपने प्राण तक को भी न्योछावर कर दे, जिस प्रकार कि मसीह ने भी कलीसिया के लिए किया।

आयत 24. यह आयत आदम द्वारा पिछली आयत में कही गई बात को आगे नहीं बढ़ाती बल्कि यह लेखक की टिप्पणी है जिसको यीशु परमेश्वर द्वारा कही बात बताते हैं (मत्ती 19:4, 5)। प्रेरित लेखक प्रथम विवाह के सिद्धान्त को सभी विवाहों में लागू कर रहा था: **इस कारण पुरूष अपने माता पिता को छोड़कर अपनी पत्नी से मिला रहेगा और वे एक तन बने रहेंगे।** यह वक्तव्य कि मनुष्य अपने माता पिता को छोड़े, टीकाकारों को परेशान करता है क्योंकि प्राचीन पुरखाओं के समाज में नारी अपने घर छोड़कर अपने पति के साथ उसके माता पिता के घर या फिर उसके समीप रहकर नए पारिवारिक जीवन का आरंभ करती थी। हालांकि कुछ घटनाएं इससे हटकर हैः जैसे कि याकूब, ऊपरी मेसोपोटामिया के हारान में, अपने ससुर के घर बीस वर्ष तक रहा (29:1-31:38); और मूसा ने अपनी पत्नी सिप्पोरा के पिता यित्रो की भेड़ बकरियों को चालीस वर्षों तक सिनै की जंगलों में चराया (निर्गमन 2:15-3:1; प्रेरितों के काम 7:29, 30)।

हालांकि यह सामान्य परंपरा नहीं थी। यह आयतें इस बात की ओर संकेत करती हैं कि पुरुष, अपने माता पिता का घर भावनात्मक तथा मानसिक रुप से छोड़ता है न कि शारीरिक रुप से। एक पुरानी कहावत यहाँ पर लागू होती है: "एक पुत्र तब तक पुत्र रहता है जब तक कि उसको पत्नी नहीं मिल जाती है; एक पुत्री अपने जीवन भर पुत्री ही रहती है।" एक नवविवाहित पत्नी का अपने पति की तुलना में अपने माता पिता से भावनात्मक लगाव अधिक रहता है; इसलिए, विवाह के द्वारा पुरुष अपने माता पिता से इस तरह अलग होता है, कि उसकी

पत्नी को अपने माता पिता से कभी अलग न होना पड़े।[51] लेखक ने अनुमान लगाया कि पितृसत्तात्मक समाज में जब एक नारी अपने पति के साथ हो लेती है और उसके परिवार का सदस्य बन जाती है तो ऐसी स्थिति में यह अवश्य था कि पुरुष अपने माता पिता पर निर्भरता को तोड़े। पत्नी ने तो अपने माता पिता के घर त्यागने के द्वारा पहले ही ऐसा कर दिया है; इसलिए अब दोनों को एक दूसरे पर निर्भर रहना है और दोनों मिलकर एक नए जीवन का प्रारंभ करना है।

24 आयत में छोड़ने के लिए क्रिया עָזַב *(आज़ब)* का प्रयोग किया गया है उसका अर्थ है कि किसी चीज़ को छोड़ देना है। यह पुराने नियम में दो सौ से भी अधिक बार प्रयोग हुआ है। यह आमतौर पर मूर्तियों के पीछे परमेश्वर को छोड़ देने से संबंधित है। यह उत्पत्ति 2:24 के संदर्भ में ठीक नहीं बैठता है क्योंकि लेखक उन मनुष्यों को अपने माता पिता को छोड़ने के लिए उत्साहित नहीं करता है जो विवाह करते हैं।

इस इब्रानी शब्द का दूसरा उपयुक्त अनुवाद "forsake" अर्थात "त्यागना" हो सकता है; और NASB इस अनुवाद का कई जगह मूर्तिपूजा के कारण लोगों का परमेश्वर और उसकी वाचा को छोड़ने के प्रति इस शब्द का प्रयोग करता है (व्यव. 28:20; 29:25; न्यायियों 10:10; 1 राजा 19:10, 14; यिर्म. 1:16; 2:13, 17, 19; 5:7; 16:11; 17:13; 19:4; 22:9)। हालांकि यहाँ लेखक के मन में "छोड़ने" का सम्पूर्ण अनुवाद "त्यागना" नहीं हो सकता है। इसके विपरीत आज़ब शब्द का प्रयोग मनुष्य को अपने माता पिता को छोड़ने का तुलनात्मक अर्थ हो सकता है। यहाँ यह कहा जा सकता है कि जब मनुष्य विवाह करता है तो उसकी प्राथमिकता भी बदलनी चाहिए। विवाह से पहले उसकी प्राथमिक ज़िम्मेदारी अपने माता पिता के प्रति थी लेकिन विवाह के बाद उसकी प्राथमिक ज़िम्मेदारी अपने पत्नी के प्रति होना चाहिए।[52]

पाश्चात्य समाज में, जहाँ माता पिता की ज़िम्मेदारी कभी-कभी बहुत कम होती है वहाँ लेखक की यह विचारधारा अधिक महत्वपूर्ण नहीं लगती है। जबकि, प्राचीन परम्परागत समाज में जहाँ माता पिता से अधिक परमेश्वर का आदर करना ही सर्वोपरि सिद्धान्त होता है, तो यह कि माता पिता को छोड़ना उस समाज के लिए एक बड़ा झटका है।[53] यह झटका यीशु के वचन कि माता पिता को अप्रिय जानने के बराबर है लेकिन वास्तव में इसका अर्थ यह है कि हमें प्रभु को अपने माता पिता से अधिक प्रेम करना है (लूका 14:26; देखें मत्ती 10:37)। इस अनुच्छेद में निस्संदेह यही सच्चाई है क्योंकि विवाह के द्वारा ज़िम्मेदारी में भी परिवर्तन होता है। जबकि पति को विवाह के बाद भी अपने माता पिता का आदर करना है (निर्गमन 20:12; व्यव. 5:16) लेकिन अब उसे अपनी पत्नी को उनसे आगे रखना चाहिए।

लेखक ने मनुष्य का अपने माता पिता को छोड़ने वाले वक्तव्य के पश्चात आगे कहा कि वह अपनी पत्नी से मिला रहेगा דָּבַק *(दाबाक़)*। इस इब्रानी शब्द का अर्थ "लगा रहना" या "लालसा करना" होता है और यह बहुधा परमेश्वर से लगे रहने या जुड़े रहने (व्यव. 10:20; 11:22; 13:4; 30:20; यहोशु 23:8),

वस्तुओं से जुड़े रहने (व्यव. 13:17), राज्यों से जुड़े रहना (यहोशु 23:12) और जीवन साथी से जुड़े रहने के लिए प्रयोग हुआ है। यह उत्पत्ति 34:3 के समान व्यक्तिगत संबंध के लिए भी प्रयोग किया गया है जिसे NASB इस प्रकार अनुवाद करता है, शकेम "दीना से अत्यधिक आकर्षित हुआ।" इब्रानी भाषा के अनुसार "उसका दिल उससे लग गया"। दाबाक से जुड़े हृदय को छू लेने वाली दूसरी घटना रूत की कहानी है: जब नाओमी ने यरुशलेम लौटने का मन बना लिया तो उसकी दोनों मोआबीन बहुएं रोई और तब ओर्पा अपने लोगों में लौट गई। लेकिन, "रूत उस से अलग न [दबाक] हुई" और कहा, "तू मुझ से यह विनती न कर, कि मुझे त्याग और छोड़कर [अज़ाब] लौट जा" (रूत 1:14, 16)।

यह विचार कि वे "जुड़े रहें" कि वे "एक तन हो जाएं" इस बात की ओर इशारा करता है कि पति और पत्नी ने जो वाचा एक दूसरे के प्रति बांधी है वे उसमें बराबर के भागीदार हों[54] जो अन्य सारे पारिवारिक रिश्तों से बढ़कर है। विवाह किसी व्यक्ति का निजी मामला नहीं है। बल्कि यह दो व्यक्तियों (एक पुरुष तथा स्त्री) का अपने परिवार के सदस्यों, उनके मित्रों और समाज के सामने उद्घोषणा है कि वे इस सबसे करीब रिश्ते में बंधकर एक नए परिवार का आधारशिला रख रहे हैं। जब विवाह के द्वारा पुरुष और स्त्री एक हो जाते हैं तो वे सृष्टिकर्ता के प्रथम आज्ञा को पूरा करने के लिए तैयार हो जाते हैं: "फूलो-फलो, और पृथ्वी में भर जाओ" (1:28)। "एक तन होने" का केवल यह प्राथमिक अर्थ नहीं है कि दोनों के मध्य यौन संबंध स्थापित हों या बच्चे पैदा करें, लेकिन यह अर्थ इस वाक्यांश से अलग भी नहीं है। लेकिन इस शब्द का मुख्य केन्द्र यह है कि "नए जोड़े का आत्मिक तथा सामाजिक एकता हो।"[55] साथी के साथ एक तन होने से, नज़दीकी रिश्तेदारों से भी अधिक मज़बूत बंधन बंध जाता है और दोनों की सारी आवश्यकताएं उस तरह से पूरी हो जाती है जो अन्य मानवीय पारिवारिक रिश्ता पूरा नहीं कर सकता है।

आयत 25. यह अध्याय इस अवलोकन के साथ समाप्त होता है कि **आदम और उसकी पत्नी दोनों नंगे थे**, **पर लजाते न थे।** यह अध्याय 3 के घटनाओं के लिए मंच तैयार करता है जिसमें पुरुष तथा स्त्री मना किए गए फल खाने के द्वारा चेत जाते हैं कि वे नंगे हैं। इस खोज के साथ ही वे प्रथम बार एक दूसरे से लजाते हैं। मूल में पुरुष और स्त्री एक दूसरे से नहीं लजाते थे। यहाँ ध्यान देने की बात यह है कि जिस प्रकार अंग्रेज़ी शब्द shame शेम पाप का बोध कराता है उस प्रकार इब्रानी शब्द בּוֹשׁ *(बोश)*, का अभिप्राय पाप के कारण मनुष्य के जीवन में कुंठा पैदा करना नहीं है। पुराने नियम में कभी-कभी *बोश* (शर्म) ऐसे स्थान पर प्रयोग किया गया है जहाँ पाप या कुंठा का बोध नहीं होता है बल्कि यह "व्याकुलता" या "लज्जा" का अनुभव कराता है। (NASB, न्यायियों 3:25 में *बोश* का अनुवाद "व्याकुलता" के रुप में करता है।) वास्तव में *बोश* बहुधा निष्क्रिय अर्थ की ओर इशारा करता है जिसमें एक व्यक्ति मुख्यतः यौन संबंधी बातों से पैदा हुए शर्म का अनुभव नहीं करता है।[56] इस शब्द का सबसे सामान्य अर्थ, किसी व्यक्ति या समुदाय को उन लोगों के सामने "कलंकित करना,"

"अपमान करना," "नीचा दिखाना" या "मूर्ख के समान दिखाना" है जिन्होंने उसके/उनके कार्यों को देखा है (यशा. 1:29; 20:5; यिर्म. 2:36; 48:13)।[57]

जब तक उन्होंने पाप नहीं किया था, वचन कहता है कि आदम और हव्वा ने एक आदर्श जीवन जीया, वे एक दूसरे के लैंगिगता को सम्पूर्णता तथा मासूमियत के साथ (छोटे बच्चों के समान) देख सकते थे क्योंकि उनका नंगापन उनके खुलेपन और भरोसे का प्रकटीकरण था। जब उन्होंने अपनी मासूमियत को पाप के कारण खोया तब उन्हें लज्जा महसूस हुई और तब उन्हें अपने नंगेपन को ढकने की आवश्यकता पड़ी (3:7)।[58] उन्होंने अपने आपको अंजीर के पत्तों से ढका और जब उन्होंने परमेश्वर को आते सुना तो वृक्षों के बीच छिपने का प्रयास किया।

इसका तात्पर्य यह नहीं है कि उत्पत्ति 2:25 नंगेपन को अच्छी और सामान्य अवस्था के रुप में प्रकाशित करती है जिसे आज समाज में स्त्री और पुरुषों को अनुभव करना है। इसके विपरीत, घड़ी की सुई को उल्टा घुमाकर उस अवस्था को वापस लाना असंभव है जिसमें छोटे बच्चों के समान जिस प्रकार आदम और हव्वा ने जब वे अपने नंगेपन से लजाते नहीं थे, अदन की निर्दोषता का आनंद उठाया। बल्कि मनुष्य का पाप में पड़ने के पश्चात, वचन के अनुसार यौन अंगों को सार्वजनिक स्थान में उघाड़ना अपमानजनक बात है (निर्गमन 20:26; 28:42, 43)। इसी प्रकार परिवार के किसी सदस्य की नग्नता को देखना अक्षम्य था, भले ही वह उसी लिंग का क्यों न हो (9:20-27)। कौटुम्बिक व्यभिचार की परीक्षा के कारण विपरीत लिंग वाले लोगों के सम्मुख नंगा होना मना था। वस्तुतः कभी-कभी इब्रानी मुहावरे के अनुसार "नंगेपन को उघाड़ना" का तात्पर्य यौन क्रिया स्थापित करना होता था। यह लैव्यव्यवस्था 18:6-17 में बार-बार दोहराया गया है जहाँ पर एक पुरुष को अपने महिला रिश्तेदार से कौटुम्बिक व्यभिचार करना मना है।[59]

अनुप्रयोग

सब्त (2:1-3)

सब्त (सप्ताह का सातवां दिन) सृष्टिकर्ता के विश्राम का दिन है। वह न तो थका था (यशा. 40:28) और न उसे किसी चंगाई की आवश्यकता थी; उसने सृष्टि के कार्य "आकाश और पृथ्वी" और "उनकी सारी सेनाओं" का सृष्टि समाप्त कर लिया था (2:1-3)। दूसरे शब्दों में, परमेश्वर जगत में वर्षा भेजने, फसल उपजाने और अपने सारे प्राणियों को जीवन और श्वास देने से कभी नहीं रुका (भजन 104:1-35; 139:13-16)। वह हमेशा कार्य करता है, यहाँ तक कि वह सब्त में भी कार्य करना नहीं छोड़ता है। वह अपने लोगों के प्रार्थना का उत्तर देता है, उनको चंगा करता है और उनके जीवनों को आशीषों से भरपूर करता है। जब यीशु को सब्त के दिन एक व्यक्ति को चंगा करने के लिए डांटा गया तो उसने जवाब दिया, "मेरा पिता अब तक काम करता है, और मैं भी काम करता हूँ" (यूहन्ना 5:17; देखें 7:21-24; 9:4, 14; 17:4)।

जब सीनै पर्वत पर दस आज्ञाएं दी गई तो सब्त रखने के पीछे तर्क यह था कि लोग परमेश्वर के विश्राम का अनुकरण करें। सातवें दिन इस्राएलियों को अपने कार्य से विश्राम करना है जैसे कि परमेश्वर ने सातवें अपने सारे कार्य समाप्त करके विश्राम किया था (निर्गमन 20:8-11)।

सब्त इस्राएलियों के लिए निष्क्रिय दिन नहीं था। यह वह दिन था जिसमें उन्हें साप्ताहिक दैनिक कार्य से विश्राम करना था, जैसे, खेत जोतना, फसल उगाना, फसल काटना इत्यादि; परंतु वे ज़रूरत के चीज़ों का खरीदारी कर सकते थे। उन्हें अपने जानवर तथा सेवकों को भी विश्राम के इस दिन का भाग बनाना था (निर्गमन 20:8-11; 23:12; देखें 34:21)। सब्त के सिद्धान्त का दुरुपयोग करने के लिए परमेश्वर के दासों द्वारा कड़ी भर्त्सना की गई (निर्गमन 31:15; नहेम्य. 13:15-22; आमोस 8:5)।

दैनिक कार्यों से विश्राम करने के जुड़े नकारात्मक विचारों (वे कार्य जो सब्त को नहीं किए जाने चाहिए) के विपरीत, सब्त एक उत्सव, और सृष्टिकर्ता परमेश्वर की आराधना और स्तुति का दिन था, जो इस्राएल का छुड़ाने वाला था। मूसा ने नई पीढ़ी को उनके मरुस्थल के यात्रा के अन्तिम पड़ाव में कहा, "और इस बात को स्मरण रखना कि मिस्र देश में तू आप दास था, और वहां से तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे बलवन्त हाथ और बढ़ाई हुई भुजा के द्वारा निकाल लाया; इस कारण तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे विश्रामदिन मानने की आज्ञा देता है" (व्यव. 5:15)।

साप्ताहिक सब्त के अलावा, इस्राएल में सभी बड़े उत्सव विशेष विश्रामदिन होता था जिसमें कोई काम नहीं किया जाता था (व्यव. 23:5-8, 15-21, 34-39; गिनती 28:25, 26; 29:1, 12, 35)। लेकिन झोंपड़ियों के पर्व के समय वे कार्य עָבַד *(आबद)*[60] करते थे, आराधना करते थे जिसमें उत्सव मनाया जाता था, स्तुति आराधना करते थे और मिलाप वाले तंबू (बाद में यरूशलेम के मंदिर) में संगति भोज में शामिल होते थे। इस पर्व में इस्राएली लोग अपने नौकर तथा नौकरानियों, लेवी और अजनबी גֵּר *(गर,* यहाँ यह अन्य जातियों से संबंधित है), अनाथ और विधवाओं को प्रभु की आराधना में भाग लेने के लिए बुलाते थे (व्यव. 16:13-15)। अपना भोजन ज़रूरतमंदो के साथ बांटकर परमेश्वर के लोग उन लोगों के प्रति सहानुभूति प्रगट करते थे जो कठिन परिस्थितियों में से होकर गुज़रते थे। जब इस्राएली लोग कनान में प्रवेश करेंगे तो उस समय पहली उपज के पर्व (अठवारों का पर्व या पिन्तेकुस्त) के लिए भी उन्हें इसी तरह का निर्देश दिया गया था।

मसीहियों के लिए सब्त न तो सप्ताह का सातवां दिन (शनिवार) है और न ही यह सप्ताह का प्रथम दिन (रविवार) है, हालाँकि रविवार, प्रभु यीशु मसीह का पुनरुत्थान का दिन मसीहियों के आराधना के लिए अति महत्वपूर्ण दिन है। मसीही युग और अनन्तकाल में भी परमेश्वर के लोग विश्राम का अनुभव प्रभु में अपने विश्वास को थामे रहने के द्वारा कर सकते हैं (इब्रा. 3:14)। इब्रानियों के पत्री के लेखक ने विश्राम (मन की शान्ति, आत्मिक स्वास्थ्य की अनुभूति और

उद्धार में भरोसा) की धारणा पर विशेष बल दिया है। प्रभु यीशु मसीह के द्वारा यह शान्ति मिलती है परंतु उसके कुछ लोग इस खतरे में थे कि कहीं अपने में "बुरा और अविश्वासी मन" उत्पन्न न कर लें और जीवित परमेश्वर से दूर हट जाएं (इब्रा. 3:12)। लेखक, इब्रानी मसीहियों, जिनको वह यह पत्री लिख रहा है और प्राचीन इस्राएलियों, जो परमेश्वर के विश्राम को जंगल में विश्वास की कमी और आज्ञा न मानने के कारण परमेश्वर को अनुभव करने से चूके थे, उनके मध्य एक उदाहरण प्रस्तुत करता है (इब्रा. 3:18, 19)। वचन के अगले भाग में अपने पाठकों को उत्साहित करते हुए वह कहता है "हम जिन्होंने विश्वास किया है, उस विश्राम में प्रवेश करते हैं" (इब्रा. 4:3)। अंत में वह यह कहता है, "सो जान लो कि परमेश्वर के लोगों के लिये सब्त का विश्राम बाकी है" (इब्रा. 4:9)।

इब्रानियों की पत्री मसीहियों के लिए जो "हो चुका है" और जो "अभी नहीं हुआ" के सिद्धान्त की नींव डालता है। परमेश्वर के लोग होने के नाते हम आने युग की अशीषों (सब्त, विश्रामदिन) का अनुभव इस जीवन में करते हैं (इब्रा. 6:4, 5) - लेकिन हम इसका पूरा आनंद स्वर्ग पहुँचने के बाद ही ले पाएंगे। उसी तरह मसीही लोग अब अनंत जीवन प्राप्त करते हैं (यूहन्ना 3:36; 5:24; 6:47, 54) लेकिन इसका पूरा आनंद वे अन्तिम न्याय के बाद ही ले पाएंगे (मत्ती 25:46)। अब हम अनंत राज्य के नागरिक हैं (कुलु. 1:12, 13), लेकिन मसीह के दोबारा आगमन पर हम अनंत राज्य के धन और आनंद में प्रवेश कर सकेंगे (मत्ती 25:31, 34)।

यह विश्राम तब प्रारंभ होता है जब कोई व्यक्ति यीशु के उस बड़े निमंत्रण को स्वीकार करता है, जिसने कहा:

> हे सब परिश्रम करने वालों और बोझ से दबे लोगों, मेरे पास आओ; मैं तुम्हें विश्राम दूंगा। मेरा जूआ अपने ऊपर उठा लो; और मुझ से सीखो; क्योंकि मैं नम्र और मन में दीन हूं: और तुम अपने मन में विश्राम पाओगे। क्योंकि मेरा जूआ सहज और मेरा बोझ हल्का है (मत्ती 11:28-30)।

प्रभु, नियम, व्यवस्था और परंपरा के बोझ से थके और दबे यहूदियों से बातें कर रहा था जिन पर यहूदी गुरुओं ने वर्षों से यह बोझ लाद रखा था (मत्ती 9:9-13; 12:1-8; 15:1-20; 23:1-12, 23, 24; यूहन्ना 7:49)।

मसीहियों का सब्त इस्राएलियों के सब्त से भिन्न है। यह एक साप्ताहिक अवकाश नहीं है या फिर साल के किसी विशेष दिन का अवलोकन नहीं है। सब्त मनाने का तात्पर्य यह है कि हमें प्रतिदिन प्रभु की आदर और महिमा अपने शरीरों को जीवित और पवित्र और परमेश्वर को भावता हुआ बलिदान करके चढ़ाना है, क्योंकि यही हमारी आत्मिक सेवा है (रोमियों 12:1)।

जीवन का वृक्ष और जीवन का जल (2:9, 10)

बाइबल में जीवन का वृक्ष और जीवन का जल का चित्रण कैसे किया गया है? इस प्रश्न का उत्तर देने के लिए, हम पुराने नियम किए इन चित्रण का

अवलोकन करेंगे।

अदन की वाटिका (2:9, 10)। परमेश्वर ने जो जीवित सृष्टिकर्ता है, मनुष्य की शारीरिक आवश्यकता की पूर्ति हेतु अदन की वाटिका में सभी वस्तुओं को उपलब्ध कराया:

> और यहोवा परमेश्वर ने भूमि से सब भांति के वृक्ष, जो देखने में मनोहर और जिनके फल खाने में अच्छे हैं उगाए, और वाटिका के बीच में जीवन के वृक्ष को और भले या बुरे के ज्ञान के वृक्ष को भी लगाया। और उस वाटिका को सींचने के लिये एक महानदी अदन से निकली और वहां से आगे बहकर चार धारा में हो गई (2:9, 10)।

प्रथम स्त्री और पुरुष अपने सुरक्षित वातावरण में अपने पौष्टिक आहार के लिए पौधों एवं वृक्षों के फलों पर निर्भर थे। सभी पौधे और फलदायी वृक्ष, जीवनदायक नदी से सींचे जाते थे जो उस वाटिका के मध्य में बहती थी। जबकि जीवन का वृक्ष, वाटिका के अन्य वृक्षों के समान वास्तविक वृक्ष था और जल भी वास्तविक नदी का था जो आगे चलकर चार भागों में बंट जाता था - इन सब को परमेश्वर - ने जो जीवन का सच्चा स्रोत है, अपने सृष्टि को स्थिर रखने के लिए उपलब्ध कराया था।

जब आदम और हव्वा ने पाप किया और अदन की वाटिका से उन्हें बाहर निकाल दिया गया तो मनुष्य ने जीवन के वृक्ष सहित, धरती के स्वर्ग को खो दिया। अदन की वाटिका में स्त्री की संतान द्वारा सर्प का सिर कुचलने की भविष्यवाणी के अलावा कुछ भी नहीं रह गया (3:15)। वक्त के गुज़रने के साथ ही, यह प्रतिज्ञा अब्राहम और सारा के द्वारा उत्पन्न संतान के लिए सीमित हो गई (12:1-3; 17:15-19) जिनसे परमेश्वर ने यह प्रतिज्ञा की कि वह कनान देश को उनके निज भूमि होने के लिए देगा।

अब्राहम से दाऊद तक - प्रतिज्ञा किए गए देश में। अब्राहम और लूत, जब वे पहली बार कनान देश में आए तो उनके इस वृतांत में पहली बार मूल अदन की वाटिका का झलक दिखाई देता है। वे धनी थे क्योंकि उनके पास अनगिनत पशु और जानवरों थे; लेकिन उनके चरवाहों के बीच झगड़ा होने लगा क्योंकि उन्हें अपने पशुओं के लिए पर्याप्त चारा और जल चाहिए था। यहाँ यह स्पष्ट हो गया कि यदि उनके मध्य अब एक स्वस्थ संबंध स्थापित होना है तो उन्हें उस प्रतिज्ञा किए हुए देश में अलग-अलग रहना पड़ेगा। अब्राहम ने बड़ी उदारता दिखाते हुए, अपने भतीजे लूत को अपने और अपने पशुओं के रहने के लिए जगह चुनने की स्वतंत्रता दी। वचन में लिखा है कि पहाड़ी देश के मध्य से, "तब लूत ने आंख उठा कर, यरदन नदी के पास वाली सारी तराई को देखा, कि वह सब सिंची हुई है। जब तक यहोवा ने सदोम और अमोरा को नाश न किया था, तब तक सोअर के मार्ग तक वह तराई यहोवा की वाटिका, और मिस्र देश के समान उपजाऊ थी। सो लूत अपने लिये यरदन की सारी तराई को चुन के पूर्व की ओर चला, और वे एक दूसरे से अलग हो गए" (13:10, 11)।

वचन स्पष्ट रुप से यह नहीं कहता कि जीवन का वृक्ष या जीवन की जल की नदी इसमें होकर बहती थी, लेकिन लूत का दृष्टांत यह संभावना जताती है कि यरदन घाटी भी अदन की वाटिका जैसी ही थी। इसको इस तरह भी समझा जा सकता है कि फलदार वृक्ष (तथा अन्य पौधे) वहां बहुतायत से उपलब्ध थे जो यरदन नदी तथा पास के अन्य झरनों से पर्याप्त पानी प्राप्त करते थे। इस प्रकार का अनुमान लूत तथा उसके परिवार के लिए गलत साबित हुआ। जिस प्रकार की दुष्टता तथा पाप वहाँ पर व्याप्त था वह केवल परमेश्वर का न्याय तथा विनाश को वहाँ के निवासियों पर लाया (13:13; 19:1-29)।

अब्राहम और लूत की कई पीढ़ियों के बाद, मूसा ने प्रतिज्ञा किए हुए देश को "अच्छी भूमि" कहा जहाँ पर्याप्त पानी था और उस घाटी में हर प्रकार के फलदायी वृक्ष थे। उसने यह भी कहा कि वहाँ विभिन्न प्रकार की फसल उगती जिससे कि लोग बिना किसी घटी के पर्याप्त भोजन खा सकते थे और उन्हें कुछ घटी न थी (व्यव. 8:7-9; देखें गिनती 13:25-27)। मूसा कनान देश को अदन की वाटिका रुप में संबोधित करता है जहाँ पानी तथा जीवन का वृक्ष था।

तथापि, अब्राहम की प्रतिज्ञा की सन्तानों और देश का इतिहास दर्दनाक कहानियों से भरा हुआ है। बापदादा अब्राहम के समय से हज़ारों वर्ष बाद, उसके वंश - इस्राएलियों ने - यहोशू की अगुवाई में कनान देश में प्रवेश किया। हालांकि उन्हें अपने शत्रुओं पर कई सफ़लता मिली फिर भी उन्होंने यहोशू के मृत्योपरांत मूर्ति पूजा की और प्रभु के प्रति अविश्वासयोग्य रहे; इसलिए उनसे उनकी शान्ति और सर्वसम्पन्नता को छीन लिया गया (न्यायियों 2:1-23)। न्यायियों के दिनों में शत्रुओं ने अक्सर आक्रमण किया और कभी कभी गोत्रवाद की ईर्ष्या के कारण गृह युद्ध भी छिड़ जाता था जिसमें इस्राएलियों ने अपने ही गोत्र वालों को घात किया।

शाऊल के शासनकाल में देश के भीतर अस्थिरता तथा युद्ध की स्थिति पैदा हो गई थी और दाऊद के शासनकाल में जब तक उसने अपने सभी शत्रुओं को अपने वश में नहीं कर लिया था, यह स्थिति और भी अधिक बढ़ गई थी। तब दाऊद के दिनों में उसके बेटे अबशालोम ने बलवा करके राजगद्दी को हड़पना चाहा (2 शमूएल 15:13; देखें 18:6, 7)। दाऊद, अपनी बची हुई सेना - के द्वारा छः सौ विश्वासयोग्य पलिश्ती अंगरक्षकों - की सहायता से वह इस विद्रोह को शान्त कर सका तथा अपने साम्राज्य को बचा पाया। इस विजय के लिए उसे बहुत भारी मूल्य चुकाना पड़ा। उसका बेटा अबशालोम मारा गया तथा बहुत बड़ी संख्या में इस्राएलियों को जान से हाथ धोना पड़ा।

"सुलैमान और जीवन का वृक्ष।" जब सुलैमान राजगद्दी पर बैठा तो तब तक इस्राएली युद्ध से थक चुके थे और वे यही कामना कर रहे थे कि परमेश्वर उन्हें ऐसा नया राजा दे जो युद्ध प्रेमी न हो, और उसके द्वारा विश्राम और सर्वसंपन्नता दे।[61] उसने अच्छा आरंभ किया, उसने परमेश्वर से धन और दीर्घायु नहीं मांगा बल्कि "बुद्धि और परखने वाले हृदय" के लिए प्रार्थना की। परमेश्वर उसके इस इच्छा से प्रसन्न होकर उसने उसे बुद्धि तथा परख की आत्मा के साथ साथ धन

और दीर्घायु से भी आशीषित किया (1 राजा 3:11-14)।

सुलैमान ने आरम्भिक दिनों में कई बुद्धि के वचन लिखे जो नीतिवचन नामक पुस्तक में पाए जाते हैं (देखें नीति. 1:1; 10:1; 25:1)। कई पद्यांशों में उसने प्रतीकात्मक रुप से अदन की वाटिका की जीवन का वृक्ष और जीवन के जल का भाषा का प्रयोग किया है जो शान्ति, खुशहाली, सुरक्षा और दीर्घायु का प्रतीक है और जिसके लिए लोग लालायित रहते हैं।

इसका एक उदाहरण नीतिवचन 3:13 में पाया जाता है, "क्या ही धन्य है वह मनुष्य जो बुद्धि पाए, और वह मनुष्य जो समझ प्राप्त करे।" सुलैमान बुद्धि को एक स्त्री के रुप में प्रस्तुत करता है, "जो बुद्धि को ग्रहण कर लेते हैं, उनके लिये वह *जीवन का वृक्ष* बनती है; और जो उस को पकड़े रहते हैं, वह धन्य हैं" (नीति. 3:18; जोर दिया गया)। यहाँ यह स्पष्ट करना अवश्य है कि जो भी बुद्धि प्राप्त करता है उसके लिए यह आवश्यक नहीं है कि वह सुलैमान के समान दीर्घायु, धन और सम्मान प्राप्त करे। इस प्रकार के वक्तव्य पूर्णतया प्रमाणित नहीं है क्योंकि अच्छे लोगों पर भी विपत्ति पड़ती है (देखें अय्यूब 1:1-2:10)। इसके विपरीत, ये आशीषें उनको मिलती है जो परमेश्वर पर भरोसा रखते हैं और उसकी इच्छा को पूरा करने के लिए तत्पर रहते हैं।

दूसरे अनुच्छेद भी इस उपमा का प्रयोग करते हैं। "जब आशा पूरी होने में विलम्ब होता है, तो मन शिथिल होता है, परन्तु जब लालसा पूरी होती है, तब *जीवन का वृक्ष* लगता है ... बुद्धिमान की शिक्षा *जीवन का सोता* है, और उसके द्वारा लोग मृत्यु के फन्दों से बच सकते हैं" (नीति. 13:12, 14; जोर दिया गया)। इसी तरह का उदाहरण नीतिवचन 15:4, "शान्ति देने वाली बात जीवन वृक्ष है, परन्तु उलट फेर की बात से आत्मा दुखित होती है।" बुद्धिमान की शिक्षा की तुलना "जीवन के वृक्ष" और "जीवन के झरने" से की गई है जिसमें बुलबुले उठते हैं, जो पाप और दुष्टता से भरी सूखी भूमि में प्यासी आत्माओं के लिए जीवन, स्वास्थ्य तथा ताज़गी लाती है। बुद्धिमान की प्रतिज्ञा की गई आशीष वैध इच्छा है। वे मानो "जीवन का वृक्ष" या "जीवन का सोता" है जिसे परमेश्वर धर्मियों को देता है ताकि वे तरोताज़ा हों और धार्मिक जीवन जीने के लिए ऊर्जा को प्राप्त करें ताकि अपने प्रभु की बड़ाई कर सकें (देखें यशा. 40:31)।

परन्तु सुलैमान के जीवन की सबसे बड़ी विडम्बना यह है कि संसार का सबसे बुद्धिमान व्यक्ति, सबसे बड़ा मूर्ख बना। उसने परमेश्वर द्वारा दिए गए धन को स्व-मंडित करने वाले भवन निर्माण में लगा दिया: उसने महल, अन्यजातियों के मंदिर और वेदियां अपने तथा अपने सैकड़ों रानियों और रखैलों के लिए महल बनवाए। धर्मी और ईश्वरभक्त जीवन जीने के बजाय उसने झूठे देवी देवताओं की उपासना में अपनी बुद्धि का दुरुपयोग किया (1 राजा 11:1-8)। उसने अपना मन बुद्धि का भेद, बावलेपन और मूर्खता को जानने में लगाया (सभो. 1:17)। उसने स्वीकारा, "और जितनी वस्तुओं के देखने की मैं ने लालसा की उन सब को देखने से मैं न रुका; मैं ने अपना मन किसी प्रकार का आनन्द भोगने से न रोका" (सभो. 2:10)। इस प्रकार की जीवन शैली खुशहाली और मन की इच्छा को पूरा

करने के बजाय, उसके जीवन में केवल दुःख, थकान, बेचैनी ही लाया। उसने अपने धन, शक्ति और अभिलाषा की पूर्ति की खोज को निम्न शब्दों में व्यक्त किया, "तब मैं ने फिर से अपने हाथों के सब कामों को, और अपने सब परिश्रम को देखा, तो क्या देखा कि सब कुछ व्यर्थ और वायु को पकड़ना है, और संसार में कोई लाभ नहीं" (सभो. 2:11)।[62]

हिजकिय्याह - शान्त आश्वासन के साथ शत्रु का सामना। कई पीढ़ी आई और गई। तब हिजकिय्याह राजा (701 ई.पू.) के शासनकाल में एक विदेशी राजा ने यरूशलेम का घेराव किया। अश्शूर के राजा सेन्हेरीब ने अपनी बड़ी सेना लेकर देश का घेराव किया। उसने यहूदा के छयालीस नगरों को नाश किया और यहूदी राजाओं को राजधानी में "पक्षी के समान पिंजड़े" में कैद किया।[63] सेन्हेरीब ने हिजकिय्याह राजा को यरूशलेम में परमेश्वर का उपहास करते हुए चिट्ठी लिखी और तुरंत राजधानी को समर्पण करने की मांग रखी।

यहूदा के राजा ने पत्र को प्रभु के सामने फैला दिया और उसने राजधानी और दाऊद के सिंहासन के लिए परमेश्वर से छुटकारे की प्रार्थना की। परमेश्वर का उत्तर तुरंत आया, "मैं इस नगर को अपने नाम के निमित्त और अपने दास दाऊद के निमित्त बचाऊँगा।" उसी रात, "परमेश्वर के एक दूत ने अश्शूर के तंबू में जाकर 185,000 अश्शूरियों को मार गिराया; और बिहान को लोग उठे, तो उन्हें मरे हुए मिले।" अब सेन्हेरीब केवल इतना कर सकता था कि वह अपमान सहकर वापस अपने राजधानी निनवे को लौट जाए (यशा. 37:35-37)। जबकि वह (सेन्हेरीब) बीस वर्ष और जिया लेकिन उसने दोबारा अपनी सेना को यहूदा की ओर लाने का हिम्मत नहीं की।

यह भजन 46 की पृष्ठभूमि हो सकती है। यदि ऐसा है तो हम भलीभाँति समझ सकते हैं कि लेखक ने परमेश्वर के लिए "शरणस्थान" और "दृढ़ गढ़" जैसे सामर्थशाली उपमा का प्रयोग क्यों किया होगा (भजन 46:1, 7, 11)। यह वही है जो "वह पृथ्वी की छोर तक लड़ाइयों को मिटाता है; वह धनुष को तोड़ता, और भाले को दो टुकड़े कर डालता है, और रथों को आग में झोंक देता है!" (भजन 46:9)। भजन के मध्य में, घटनाओं में अचानक आए परिवर्तन का वर्णन करने के लिए लेखक ने वाटिका के रूपक को दिया। उसने लिखा, "*एक नदी है जिसकी नहरों से परमेश्वर के नगर में अर्थात परमप्रधान के पवित्र निवास भवन में आनन्द होता है।* परमेश्वर उस नगर के बीच में है, वह कभी टलने का नहीं" (भजन 46:4, 5; जोर दिया गया)।

क्योंकि यरूशलेम, इस्राएल देश के पहाड़ के ऊपर स्थित है, अतः उसमें वास्तविक नदी का प्रवाह नहीं है। पुराने नियम के दिनों, यरूशलेम नगर में केवल एक ही ताज़े पानी का स्रोत था अर्थात गीहोन का सोता, जो नगर के बाहर किद्रोन घाटी के ओपेल पहाड़ से प्रारंभ होता था। जब हिजकिय्याह को यहूदा पर अश्शूर के हमले का अंदेशा हुआ तो उसने अपने अभियंताओं की सहायता से ओपेल पहाड़ के नीचे से पानी की नहर को खुदवाया जिससे पानी दक्षिणी अलंग से बहकर नगर के अंदर शिलोम के कुण्ड में आए (2 राजा 20:20;

2 इतिहास 32:30)।

यह सोता, जो यरूशलेम में जीवनदायक जल लाया था, संभवतः भजनकार को यह लिखने के लिए प्रेरित किया होगा कि परमेश्वर ने एक सोता फिर उपलब्ध कराया है जिससे सभी चीज़ें फलदायी हो गईं हैं। जब सभी मानवीय आशा जाती रही, तो केवल वही है जिसने सेन्हेरीब की सेना को नाश किया। यह वही है जो उन लोगों के लिए चंगाई, उद्धार का जीवनदायक जल और आशा लाया जिन्होंने अश्शूर के चढ़ाई के समय दुःख उठाया था।[64]

यिर्मयाह - परमेश्वर की ओर से "जीवन का जल"। लगभग एक सौ वर्ष बाद, लोगों की दुष्टता तथा मूर्तिपूजा के विरुद्ध, जीवन के जल का उदाहरण देते हुए भविष्यवक्ता की आवाज़ सुनाई देती है। उदाहरण के लिए यिर्मयाह ने यहोवा की ओर से देश के विरुद्ध इस प्रकार का अभियोग लगाया, "क्योंकि मेरी प्रजा ने दो बुराइयां की हैं: उन्होंने मुझ *बहते जल के सोते* को त्याग दिया है, और, उन्होंने हौद बना लिए, वरन ऐसे हौद जो टूट गए हैं, और जिन में जल नहीं रह सकता" (यिर्म. 2:13; जोर दिया गया)। यहाँ यह कल्पना करना हृदय विदारक है कि कोई भी समझदार व्यक्ति समय निकालकर अपने लिए अस्थिर स्थान पर खोदकर कुण्ड नहीं बनाएगा क्योंकि वह जल्द ही कुण्ड टूट जाएगा और फिर उसमें जल संचय नहीं किया जा सकता। यह विशेषकर उस संदर्भ में उचित जान पड़ता है जब वह किसी समीप के सोते को जिसमें से स्थानीय लोगों के लिए जल फूट निकलता है, पाटकर जल रोकना चाहे। यिर्मयाह ने परमेश्वर को एक सोता या सभी भौतिक और आत्मिक जीवन के स्रोत के रुप में देखा। जीवित परमेश्वर से मुँह मोड़कर झूठे देवी देवताओं की उपासना करने में कोई बुद्धिमानी नहीं है, क्योंकि मानो यह जीवन के बदले मृत्यु को चुनने के समान होगा।

यहेजकेल - आशा की नई किरण। पुराने नियम की अन्तिम पुस्तक जिसमें अदन की वाटिका की उपमा मिलती है वह यहेजकेल 47:1-12 है। भविष्यवक्ता उस समय निर्वासित यहूदियों के साथ था जिनमें से बहुतों ने प्रतिज्ञा किए हुए देश में वापस लौटने दी आशा खो दी थी। वे मानो "सूखी हड्डियों" की घाटी के समान हो गए थे, वे निर्जीव तथा सूर्य की गर्मी से मुर्झा चुके थे (यहेज. 37:1-9)। यहेजकेल को इन सूखी हड्डियों (यहूदी बन्दियों) को प्रचार करने के लिए कहा गया; और उसके संदेश तथा परमेश्वर के आत्मा के द्वारा ये लोग आत्मिक पुनरुत्थान का अनुभव करेंगे। उनके जीवन में नई आशा तथा उद्देश्य का संचार होगा। परमेश्वर का संदेश बचे हुए लोगों के लिए शुभ संदेश था क्योंकि उसने प्रतिज्ञा की थी कि वह उनको बाबुल की बंधुआई से छुड़ायेगा और उन्हें इस्राएल की धरती पर लौटा ले आएगा (यहेज. 37:10-14)।

परंतु एक नई समस्या खड़ी हो गई। मातृभूमि का अधिकांश हिस्सा उजाड़ पड़ा था। यरूशलेम और अधिकांश शहरपनाह से घिरे नगर खण्डहर में बदल चुके थे। लौटकर आने वाले लोगों को एक बार फिर से नई शुरुआत करनी होगी, उन्हें ज़मीन साफ करनी होगी, उसे जोतना होगा और उसमें फसल की बुआई करनी होगी और तत्पश्चात् उन्हें अपने घर बनाने होंगे। वे अन्यजातियों के मध्य

कैसे टिक पाएंगे? वे तो उनके लौटने से क्रोधित हो रहे थे। उनको नई फसल उगाने में तथा अपने जानवरों के लिए घास उगाने में कितना समय लगेगा? ये सारे प्रश्न लोगों के मन में कौंध रहे होंगे। इसलिए, परमेश्वर ने भविष्यवक्ता को दूसरा दर्शन दिया: यह दर्शन यरूशलेम नगर के लिए, मंदिर के लिए और उनके देश के लिए था जिनका सांकेतिक भाषा में वर्णन किया गया था।

यहेजकेल 47 में परमेश्वर के मंदिर से जल बहने के बारे में लिखा गया है। सबसे पहले वह बूँद जैसा था, फिर एक सोता बना और उसके बाद उसने एक बड़ी नदी का रुप धारण कर लिया जिसे कोई नहीं पार कर सकता था। भविष्यवक्ता ने जल को अराबाह (मृतसागर के दक्षिण पश्चिम की मरुस्थल) की तरफ़ बहते हुए देखा। जब वह बहकर समुद्र में गिरी तो उसका जल निर्मल हो गया और वह मछलियों से भर गई। जहाँ कहीं भी यह नदी बहकर गई, वहाँ पेड़ पौधे उग आए। इसके किनारों पर सभी प्रकार के खाने योग्य फलदार वृक्ष उगे। इनके बारे में यहेजकेल ने कहा, "नदी के दोनों तीरों पर भांति-भांति के खाने योग्य फलदाई वृक्ष उपजेंगे, जिनके पत्ते न मुर्झाएंगे और उनका फलना भी कभी बन्द न होगा, क्योंकि नदी का जल पवित्र स्थान से निकला है। उन में प्रत्येक महीने, नए नए फल लगेंगे। उनके फल तो खाने के, ओर पत्ते औषधि के काम आएंगे" (यहेज. 47:12; देखें प्रका. 22:1, 2)।

यहाँ अदन की वाटिका से रूपक लिया गया है और जीवनदायी नदी की तुलना उस नदी से की गई है जो परमेश्वर के सिंहासन से निकलती है[65] जहाँ परमेश्वर करूबों पर विराजमान था (2 शमूएल 6:2)। वहाँ उगने वाले फलदाई वृक्ष[66] कभी न समाप्त होने वाले फल उगेंगे तथा वे लोगों को चंगाई प्रदान करेंगे।

वास्तव में जो लोग बाबुल की बन्धुआई से लौटकर आए थे उन्होंने इस आशीष का अधूरा आनंद उठाया। पापांगीकार और आराधना के एक गीत में, बन्धुआई से लौटकर आने वाले लोगों ने अपनी दुर्दशा का वर्णन "दासों" के समान की; और उन्होंने बताया कि उनके विदेशी स्वामियों ने उनके फसल और पशुओं इत्यादि को छीन लिया है (नहेम्य. 9:36, 37)। उन्हें अपनी इस दुर्दशा का कारण नहीं मिल पा रहा।

यहूदियों को यह समझ लेना चाहिए था कि उनकी दुर्दशा का मुख्य कारण यह था कि परमेश्वर की प्रतिज्ञाएं शर्तों पर आधारित थीं। उनका पूरा होना उनके पश्चाताप, पापों का अंगीकार और मूसा की वाचा का पालन करने पर निर्भर था।

इस अध्ययन के शेष भाग में हम नए नियम में बताए जीवन का वृक्ष और जीवन का जल का विश्लेषण देखेंगे।

यीशु मसीह, जो जीवन का जल देता है। जब यीशु का जन्म बैतलहम में हुआ, तो उस समय यहूदी लोग दाऊद के वंश के उस मसीह का प्रतीक्षा कर रहे थे जो उनके सभी शत्रुओं को हराएगा, दुष्ट हेरोदेस को यहूदा की राजगद्दी से उतार फेंकेगा और रोमियों को उनके धरती से खदेड़ देगा। इस्राएल के लोगों की मसीह की आशा को पलिस्तीन में की गई जीवन का वृक्ष और जीवन का जल समेत नई अदन वाटिका की भविष्यवाणियों से जोड़ा जा सकता है।[67] बहुत से

लोग, यीशु का स्वर्ग के राज्य का दर्शन और जो आशा उन्होंने थाम रखी थी उन दोनों के भेद को समझने में असफ़ल थे।

जब यीशु ने अपनी सेवा प्रारंभ की तो उसने घोषणा की, "समय पूरा हुआ है, और परमेश्वर का राज्य निकट आ गया है; मन फिराओ और सुसमाचार पर विश्वास करो" (मरकुस 1:15)। स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करने के लिए उसकी शर्तें यहूदी अगुओं को डराने वाली थी। यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के समान (मत्ती 3:1-12; मरकुस 1:1-5; लूका 3:2-9; 7:29, 30), यीशु ने भी उनसे नए आत्मिक जन्म लेने अर्थात मन फिराने पर बल दिया। उसने जोर देकर निकुदेमुस से कहा, "मैं तुझ से सच-सच कहता हूं; जब तक कोई मनुष्य जल और आत्मा से न जन्मे तो वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता" (यूहन्ना 3:5)।

इससे भी अधिक विचलित करने वाली बात यीशु की अपनी पहचान के विषय में था, जो उसने तंबुओं के पर्व के दिन पर कही, जो यरुशलेम में सितंबर या अक्तूबर में मनाया जाता था। इस अवसर पर, यहूदी परंपरा के अनुसार महायाजक शलोम के कुण्ड तक शोभायात्रा की अगुवाई करता था, जहाँ से वह जल लेकर वापस मंदिर में लौट जाता था। जब वे नगर के चक्कर लगा चुके होते थे, तब शोभायात्रा में शामिल लोग आनंदपूर्वक जल भरने वाली यह गीत गाते थे, "तुम आनन्द पूर्वक उद्धार के सोतों से जल भरोगे" (यशा. 12:3) और "तू अपनी सुख की नदी में से उन्हें पिलाएगा" (भजन 36:8)। वे "जीवन का सोता" के रूप में परमेश्वर की स्तुति करेंगे (भजन 36:9)।

जब वे शरद ऋतु की फसल की बोआई के लिए वर्षा की प्रार्थना करते थे तो मिस्री स्तुति के भजन गाया करते थे (भजन 113-118), जिसमें वे इस घटना को स्मरण करते थे कि किस प्रकार परमेश्वर ने जंगल में "चट्टान को जल का ताल, चकमक के पत्थर को जल का सोता बना डालता है" (भजन 114:8)। वे अन्त के दिनों के मसीहा के जल की नदी की कामना करते थे (यहेज. 47:1-9; जकर्याह 13:1; 14:8, 16, 17) और यह प्रार्थना करते थे, "हे यहोवा, विनती सुन, उद्धार कर! हे यहोवा, बिनती सुन, सफ़लता दे!" (भजन 118:25)। समारोह के चरम बिन्दु पर, जब वे वेदी का सात परिक्रमा कर चुके होते थे तो महायाजक, वेदी के आधार पर जल उंडेल देता था।[68] ऐसा लगता है कि ऐसे क्षण में यीशु ने खड़े होकर यह घोषणा की थी:

> फिर पर्व के अंतिम दिन, जो मुख्य दिन है, यीशु खड़ा हुआ और पुकार कर कहा, यदि कोई प्यासा हो तो मेरे पास आकर पीए। जो मुझ पर विश्वास करेगा, जैसा पवित्र शास्त्र में आया है उसके हृदय में से जीवन के जल की नदियां बह निकलेंगी। उस ने यह वचन उस आत्मा के विषय में कहा, जिसे उस पर विश्वास करने वाले पाने पर थे; क्योंकि आत्मा अब तक न उतरा था; क्योंकि यीशु अब तक अपनी महिमा को न पहुंचा था (यूहन्ना 7:37-39)।

यह यूहन्ना के सुसमाचार में यीशु के बड़े दावों में से एक है। लोग, परमेश्वर से "जीवन का जल" देने और "सम्पन्नता भेजने" और अपने "उद्धार" के लिए गीत

गा रहे थे तथा प्रार्थना कर रहे थे। इस तथ्य को कि वह ऐसे जल, आशीष तथा उद्धार का स्रोत है, यीशु यही दावा कर रहा था कि वह अलौकिक परमेश्वर का पुत्र है। पुराने नियम में केवल एकमात्र परमेश्वर ही "जीवित जल के सोते" के रूप में वर्णित किया गया है (यिर्म. 2:13), जो सृष्टि कर सकता है, आत्मा दे सकता है, जीवन दे सकता है, आशीष दे सकता है और अपने लोगों का उद्धार कर सकता है। यीशु यही दावा कर रहा था कि वह इन सभी गुणों से सर्वसम्पन्न है। मसीह पर विश्वास करने और उसकी आज्ञाओं को मानने से ही अनंत जीवन का अनुभव होता है (यूहन्ना 3:36; 5:39, 40; 11:25-27; 14:6; 17:3)।

मसीही और उनका जीवन देने वाला संदेश। मसीह की प्रायश्चित - मृत्यु, उसका पुनरुत्थान और स्वर्गारोहण होकर परमेश्वर की दाहिनी ओर बैठना - सुसमाचार कहलाता है। प्रेरितों ने इसका चारों ओर जाकर प्रचार किया। यह संदेश इतना सामर्थशाली था कि इसके द्वारा एक नए समाज अर्थात कलीसिया का उदय हुआ, जो मसीह की आत्मिक देह है। यह उन लोगों का समूह है जिन्होंने प्रभु यीशु मसीह को अपने पापों से पश्चाताप करके और बपतिस्मा लेकर अपने जीवन का प्रभु और उद्धारकर्ता ग्रहण किया है। नए मसीही जो कलीसिया में जोड़े जाते थे और जिन्होंने पापों की क्षमा प्राप्त की थी, पवित्र आत्मा से भरे जाते थे (प्रेरित 2:16-42)।

हज़ारों यहूदी लोग जिन्होंने नया जन्म प्राप्त किया था और बढ़ती हुई कलीसिया के अंग बन रहे थे, और इसके फलस्वरूप, यरूशलेम और आसपास के क्षेत्रों में मसीहियों पर घोर सताव प्रारंभ हो गया था (प्रेरित 4:1-8:3)। मसीहियों के इस दावे के विरुद्ध यीशु ही मसीह है आरंभिक मसीहियों को, जो अपने चारों ओर की क्षेत्रों में जा जाकर वचन का प्रचार करते थे, अन्यायपूर्ण विरोध का सामना करना पड़ा (देखें प्रेरित 8:4)। रोमी सरकार की ओर से मसीहियों पर सताव सन् 64 ई. तक अर्थात जब तक कि रोम नगर नहीं जलाया गया (जिसे जलाने का दोष नीरो ने मसीहियों के सिर मढ़ दिया था), प्रारंभ नहीं हुआ; लेकिन यह सताव प्रथम सदी के अन्तिम चरण में डोमिशियन के द्वारा अति भयावह हो गया था। इसलिए, अब कलीसिया अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष करने लगी, इसके दौरान बहुत से मसीही लोग, जिन्होंने अपने विश्वास को नहीं त्यागा, या शासक के लिए धूप नहीं जलाई या उसको ईश्वर करके मानने से इनकार किया, शहीद हो गए।

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में नदी और जीवन के वृक्ष का दृष्य। बूढ़ा यूहन्ना, संभवतः अन्तिम जीवित प्रेरित, को पतमुस नामक टापू में बन्धुआ बनाकर भेजा गया। वहाँ प्रभु की ओर से उसे दर्शन मिला, जो दुःख भोगते मसीहियों को उत्साहित करने के लिए था। यह दर्शन नए नियम की अन्तिम पुस्तक प्रकाशितवाक्य में लिखे गए। उनको विशेष आशीष दी गई जो इसे पढ़ते और "वे जो सुनते हैं और इस में लिखी हुई बातों को मानते हैं" (प्रका. 1:3)।

इन दर्शनों में यूहन्ना ने पुराने नियम के समय में यहूदियों और प्रथम सदी के मसीहियों के साथ जो कुछ हुआ उसके बीच समानता को देखा। जिस प्रकार

बाबुल की सेना ने मध्य पूर्व की ओर चढ़ाई करने यहूदा को नाश किया और दाऊद के घराने के अन्तिम शासक को बन्दी बनाया उसी प्रकार रोम ने (नए बाबुल, शैतान के हथियार के रूप में) उस समय के सभी देशों पर अपना कब्ज़ा जमा लिया था। वे मानो शहीदों के लहू पीए हों (प्रका. 17:5, 6) और यह इच्छा उनके मन में थी कि वे कलीसिया को नाश कर दें और महान दाऊद के घराने के राजा, यीशु मसीह के दावे को अमान्य घोषित कर दें (प्रका. 12:5, 17)।

उन दिनों के कठिन समय में प्रभु ने मसीहियों के लिए दीर्घायु तथा शारीरिक आशीष की प्रतिज्ञा नहीं रख छोड़ी। उसने उन्हें सताव तथा मृत्यु से बचाने की भी प्रतिज्ञा नहीं की। धरती पर भली भांति सिंचित अदन की वाटिका में शाब्दिक रूप में पहले से ही कोई जीवन का वृक्ष नहीं था। सन् 70 ई. जब रोमियों ने यरूशलेम नगर तथा मंदिर का सर्वनाश कर दिया था और उसके बाद यरूशलेम व मंदिर का महिमामय पुनर्निर्माण की कोई आशा नहीं थी। आगे, धूमिल पड़ चुके सपने, पलिस्तीन देश में सिंहासन और दाऊद के साम्राज्य की पुनःस्थापना भी साकार होते हुए नज़र नहीं आ रही थी। मसीहियों को परमेश्वर की विस्तृत तथा उच्चकोटी की आशीषों की अपेक्षा करने के लिए उत्साहित किया गया था। उन्हें भौतिक धन तथा इस संसार की परेशानियों से ऊपर उठने के लिए उत्साहित किया गया था और सदाकाल के राजगद्दी पर जहाँ से परमेश्वर राज करता है, दृष्टि करने के लिए कहा गया था। उन्हें अपनी आँखें बलिदान हुए मेमने अर्थात यीशु पर लगाए रखनी थी, जो हमारे पापों के लिए मारा गया परंतु मृतकों में से जी उठा, स्वर्ग पर चढ़ गया और अब जहाँ से वह राजाओं के राजा और प्रभुओं के प्रभु के रूप में राज करता है।

नए नियम में प्रतिज्ञा किया हुआ देश अब धरती का कोई अस्थाई स्थान नहीं है; वह नया यरूशलेम है जो स्वर्ग में सुरक्षित है (इब्रा. 11:10, 16; 1 पतरस 1:3-5; 2 पतरस 3:9-13), यह तब तक प्रकट नहीं होगा जब तक कि वर्तमान आकाश और धरती समाप्त नहीं हो जाते (प्रका. 21)। इसको विश्वासियों के विश्राम देश, अनंत अदन की नई वाटिका के रूप में दर्शाया गया है। मूल स्वर्गलोक के सांकेतिक भाषा में "जीवन के वृक्ष के समक्ष जाने का अधिकार" विजय पाने वालों के लिए है; यह "बारह प्रकार का फल" उगाएगी और "इसके पत्तों" से जाति जाति के लोग चंगाई प्राप्त करेंगे (प्रका. 2:7; 22:2, 14)। "जीवन का जल" उन भूखे और प्यासे लोगों को दिया जाएगा जो आत्मा और दुल्हन की वाणी का प्रत्युत्तर देंगे (प्रका. 22:17)।

> फिर श्राप न होगा, और परमेश्वर और मेम्ने का सिंहासन उस नगर में होगा और उसके दास उसकी सेवा करेंगे। वे उसका मुँह देखेंगे, और उसका नाम उनके माथों पर लिखा हुआ होगा। फिर रात न होगी, और उन्हें दीपक और सूर्य के उजियाले की आवश्यकता न होगी, क्योंकि प्रभु परमेश्वर उन्हें उजियाला देगा, और वे युगानुयुग राज्य करेंगे (प्रका. 22:3-5)।

ये और अन्य चिह्न, वे गूढ़ धन है जिन्हें परमेश्वर ने मसीह में उन लोगों के

लिए रख छोड़ा है जो “प्राण देने तक विश्वासी” हैं (प्रका. 2:10)।

समाप्ति नोट्स

[1]विक्टर पी. हैमिल्टन, *द बुक आफ जेनेसिसः चैप्टर 1-17,* द न्यू इन्टरनेश्नल कमेन्टरी आन दी ओल्ड टेस्टामेन्ट (ग्रैन्ड रैपिड्स, मिशीगनः विलियम बी. एर्डमैन्स पब्लिशिंग कम्पनी, 1990), 142. [2]गॉर्डन जे. वेनहाम, *जेनेसिस 1-15,* वर्ड बिब्लिकल कमेन्ट्री, खण्ड 1 (वाको, टेक्सासः वर्ड बुक्स, 1987), 35. [3]विक्टर पी. हैमिल्टन, “שָׁבַת,” *TWOT* में, 2:902-3. [4]थॉमस ई. मक्कोमिसकी, “קָדַשׁ,” *TWOT* में, 2:786. [5]जॉन टी. विलिस, *जेनेसिस,* द लिविंग वर्ड कमेन्ट्री (आस्टीन, टेक्सास: स्वीट पब्लिशिंग कम्पनी, 1979), 98. [6]वेन्हाम, 57. [7]लुडविग कोहलर और वाल्टर बॉमगार्टनर, *द हिब्रू एण्ड आरामाइक लेक्सीकन आफ दि ओल्ड टेस्टामेंट,* स्टडी एडीसन, ट्रांसलेशन एण्ड एडिटर एम. ई. रिचार्डसन (बोस्टन: ब्रिल, 2001), 1:399-401, में *योम* के लिए दस विभिन्न प्रविष्टियाँ पाई जाती है। [8]यह तर्क किया जा सकता है कि प्रथम तीन दिन, सूर्य और चंद्रमा, जो दिन और रात पर प्रभुता करते हैं, के सृष्टि के पूर्व, दिन लंबे अवधि के थे (1:16, 18)। यद्यपि, मूल पाठ सृष्टि के दिनों की अवधि अलग अलग नहीं बताती है। [9]डेरेक किडनर, *जेनेसिस: एन इन्ट्रोडक्सन एण्ड कमेन्ट्री,* द टिन्डेल ओल्ड टेस्टामेन्ट कमेन्ट्रीज (डॉनर्स ग्रूव, इलिनॉयस: इन्टर-वरसिटी प्रेस, 1967), 59. [10]यह शब्द NASB के कुछ प्रकाशन के किनारे पर लिखे नोट्स में प्रकट होता है।

[11]रोनाल्ड बी. एलन, “עָשָׂב,” *TWOT* में, 2:700. [12]रॉबर्ट एल. अल्डेन, “אֵד,” *TWOT* में, 1:17. [13]इबिड. [14]बी. ओट्ज़ेन, “יָצַר,” *थियोलोजिकल डिक्शनरी आफ दि ओल्ड टेस्टामेन्ट,* अनुवादक डेविड ई. ग्रीन, संपादक जी. जोहान्नेस बोटरवेक्क और हेल्मर रिंगग्रेन (ग्रैंड रैपिड्स, मिशीगन: विलियम बी. एर्डमान्स पब्लिशिंग कम्पनी, 1990), 6:259, 262. [15]किडनर, 60. [16]पुराने नियम में जीवन और मृत्यु तथा मनुष्य के प्राण या आत्मा के विषय कई पहेलियां पाई जाती है। इन विषयों पर संपूर्ण ज्ञान केवल यीशु के द्वारा ही प्रकट हुआ है। इसलिए, उसके द्वारा हम यह जानते हैं कि मृत्यु मनुष्य का अन्त नहीं है और मनुष्य का एक भाग है जो मृत्योपरांत भी जीवित रहता है। निम्नलिखित वचन आवश्यक रोशनी इस विषय पर डालती है: मत्ती 10:28; लूका 16:19-31; 20:37, 38; 23:43; यूहन्ना 11:25, 26; प्रेरितों 2:30, 31; 2 कुरि. 4:16-5:8; फिलि. 1:21-23; 1 पतरस 1:3; प्रका. 6:9-11. [17]जेम्स ई. स्मिथ, “גַּן” *TWOT* में, 1:168-69. [18]होवर्ड एन. वालेस, “ईडन, गार्डन आफ,” *दि एन्कर बाइबल डिक्शनरी,* सम्पादक डेविड नोएल फ्रीडमैन (न्यू योर्क: डबलडे, 1992), 2:281. [19]कार्ल शुल्ट्ज़, “עֵדֶן,” *TWOT* में, 2:646. [20]ई. ए. स्पैसर, *जेनेसिस,* दि एन्कर बाइबल, खण्ड 1 (गार्डन सिटी, न्यू यॉर्क: डबलडे एण्ड क., 1964), 26.

[21]हैमिल्टन, *द बुक ओफ़ जेनेसिस: चैप्टर्स 1-17,* 163-64. [22]विल्लिस, 107. [23]इबिड., [24]ब्रुस वावटर, *आन जेनेसिस: अ न्यू रीडींग* (गार्डन सीटी, न्यू यॉर्क: डबलडे एण्ड क., 1977), 73. [25]विलियम व्हाइट, “ראשׁ,” *TWOT* में, 2:825. [26]इस संदर्भ में *ro'shim, रोशिम का ठीक अर्थ ढूँढने के बजाय यहाँ यह प्रश्न उठता है कि यह चार नदियों की प्रवाह की भौगोलिक परिस्थिति को लेखक ने कौन सी दिशा दी है।* [27]यह वही भौगोलिक स्थिति है जहाँ “आरारात पहाड़” पर नूह का जहाज आकर ठहर गया था (8:4)। [28]जॉन एच. वाल्टन, विक्टर एच. मैथ्यूस और मार्क डब्ल्यू चावालास, *दि आई वी पी बाइबल बैकग्राउंड कमेन्ट्री: ओल्ड टेस्टामेंट* (डावनर्स ग्रूव, इलीनॉइस: इन्टरवारसिटि प्रेस, 2000), 31; देखें जेम्स ए. साऊर, “द रिवर रन्स ड्राई,” *बिब्लिकल आरख्योलोजी रिव्यू* 22, न. 4 (जुलाई-अगस्त 1996): 52-57, 64. [29]KJV के अनुसार कूश “थियोपिया” है 2:13. [30]स्पैसर, 66, 72.

[31]हैमिल्टन, *द बुक आफ जेनेसिस: चैप्टर्स 1-17*, 170. [32]*द क्रिएशन एपिक* 6.8, 34-37. [33]जॉन ई. हार्टले, "שָׁמַר," *TWOT* में, 2:939. [34]लियोनार्ड जे. कॉप्स, "נוּחַ," *TWOT* में, 2:562. [35]स्पैसर, 17. [36]रोनाल्ड यंगब्लड, नोट्स ऑन जेनेसिस, *NIV स्टडी बाइबल में*, सम्पादक केनेथ बार्कर (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: ज़ोंडर्वन पब्लिशिंग हाउस, 1985), 9. [37]जॉन डोन, "मैडिटेशन XVII," *दी कम्पलीट पोएट्री एंड सिलेक्टेड प्रोस ऑफ़ जॉन डोन तथा दी कम्पलीट पोएट्री ऑफ़ विलियम ब्लेक*, सम्पादक रोबर्ट सिल्लिमन हिल्ल्येर, जॉन हेवार्ड, और ज्याँफ्री लैंग्डोन कीन्स (न्यू यॉर्क: मॉडर्न लाइब्रेरी, रैंडम हाउस, 1941), 332. [38]यू. बर्गमैन, "עזר," *थियोलॉजिकल लेक्सिकन ऑफ़ द ओल्ड टेस्टामेंट*, अनुवादक मार्क ई. बिडडल, सम्पादक एर्न्स्ट जेन्नी और क्लाउस वेस्टरमैन (पीबॉडी, मैस.: हेंड्रिकसन पब्लिशर्स, 1997), 2:872. [39]इस गणना में वे परिच्छेद भी सम्मिलित हैं जिनमें क्रिया "सहायता" (עָזַר, *अज़र*) आते हैं। [40]लियोनार्ड जे. कॉप्स, "עָזַר," *TWOT* में, 2:550.

[41]वेन्हम, 68. [42]इबिड. [43]किडनर, 65. [44]विलियम व्हाइट, "תַּרְדֵּמָה," *TWOT* में, 2:833-34. [45]जॉन ई. हार्टली, "צָלַע," *TWOT* में, 2:768. [46]केनेथ ए. मैथ्यूस, *जेनेसिस 1-11:26,* द न्यू अमेरिकन कमेंट्री, वोल्यूम 1ए (नैशविल्ले: ब्राडमैन एंड हॉलमैन पब्लिशर्स, 1996), 216-17. [47]सिगफ्राइड वागनेर, "בָּנָה" *थियोलोजिकल दिक्शनरी आफ ओल्ड टेस्टामेंट,* अनुवादक जॉन टी. विलिस, सम्पादक जी. जोहान्नेस बोट्टरवेक्क और हेल्मेर रिंग्रेन (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगनः विलियम बी. एर्डमैन्स पब्लिशिंग कम्पनी, 1975), 2:166-68, 173. [48]हैमिल्टन, *द बुक आफ जेनेसिसः चैप्टर्स 1-17,* 179. [49]यह मनुष्य का प्रथम लिखित शब्द है। उसने 1:19, 20 में जीवित प्राणियों के नाम रखे परंतु उसने उन्हें क्या कहकर संबोधित किया, यह नहीं लिखा गया है। [50]एन. पी. ब्रात्सियोतीस, "אִישׁ," *थियोलोजिकल दिक्शनरी आफ ओल्ड टेस्टामेंट,* अनुवादक जॉन टी. विलिस, सम्पादक जी. जोहान्नेस बोट्टरवेक्क और हेल्मेर रिंग्रेन (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगनः विलियम बी. एर्डमैन्स पब्लिशिंग कम्पनी, 1974), 1:223-26.

[51]हैमिल्टन, *द बुक आफ जेनेसिसः चैप्टर्स 1-17,* 180. [52]वैनहैम, 70-71. [53]जॉन ई. हार्टले, *जेनेसिस,* न्यू इंटनेशनल बिब्लिकल कमेंटरी (पीबॉडी, मास्साचूसेट्सः हेन्ड्रीक्शन पब्लिशर्स, 2000), 63. [54]जबकि उत्पत्ति 2:22-24 में वाचा בְּרִית (*bᵉrith*) *बेरिथ* जैसे शब्द का प्रयोग नहीं हुआ है लेकिन इसका आशय यहाँ पर पाया जाता है। कालान्तर में *बेरिथ* पुरुष तथा स्त्री के विवाह वाचा में प्रयोग किए जाने लगा (नीति. 2:17; मलाकी 2:14)। विवाह की वाचा की समानता परमेश्वर (पति) और इस्राएल (दुल्हन) के बीच संबंध के रुप में देखा जाने लगा जिससे उसने मिस्र से निर्गमन के समय विवाह किया है (यिर्म. 31:32; यहेज. 16:8)। [55]हार्टले, *जेनेसिस,* 64. [56]हॉर्स्ट सीबास, "בּוֹשׁ," *थियोलोजिकल दिक्शनरी आफ ओल्ड टेस्टामेंट,* 2:52. [57]इबिड, 2:52-60. [58]ब्रूस के. वाटके, *जेनेसिसः ए कमेन्ट्री* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशीगनः जॉन्डरवैन पब्लिशर्स, 2001), 90. [59]लैव्यव्यवस्था 18:6-17 में NASB ने शाब्दिक अनुवाद "नंगेपन को उघाड़ना" प्रयोग किया है। कई अन्य अनुवाद इस मुहावरे को "यौन क्रिया करना" या इसी के समकक्ष वाक्यांश का प्रयोग किया है (NIV; NLT; NCV; TEV; CEV; NJB; NEB; REB)। [60]यद्यपि हम इसे व्यवस्थाविवरण 16:13-15 में नहीं पाते, पर यह शब्द अन्य कई लेखों में मिलता है जहाँ यह आराधना के लिए प्रयोग किया गया (देखें निर्गमन 3:12; 4:23; 7:16; 10:26)।

[61]लगता है कि उनकी यह इच्छा स्वीकार कर ली गई थी क्योंकि सुलैमान नाम का अर्थ ही "शान्ति" है (डेविड एफ. पेन, "सोलोमन," *इन्टरनेशनल स्टेन्डर्ड बाइबल एनसाईक्लोपीडीया,* रिवाइज्ड एडिशन, सम्पादक जौफरी डब्ल्यु. ब्रोमीली [ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगनः विलियम बी. एर्डमैन्स पब्लिशिंग कम्पनी, 1988], 4:566)। [62]सभोपदेशक की पुस्तक में इस प्रकार के वक्तव्य को कई बार दोहराया गया है। हम ऐसा सोच सकते हैं कि अन्ततः सुलैमान ने अपने बरबादी, अनैतिकता और मूर्तिपूजा से पश्चाताप किया होगा (सभो. 12:13, 14)। किन्तु उसने अपने पुत्र रहूबियाम और अन्य उत्तराधिकारियों के लिए एक दर्दनाक विरासत छोड़ी। [63]ए. लियो ओप्पेनहैम, अनुवादक, "द एन्नल्स ओफ़ सेनाकरीब," *एन्सीएन्ट नियर ईस्टर्न टेक्स्टः रिलाटिंग टू द*

ओल्ड टेस्टामेंट, 3rd एडीशन, सम्पादक, जेम्स बी. प्रिचार्ड (प्रिंस्टन, एन. जे.: प्रिंस्टन यूनीवर्सीटी प्रेस, 1969), 288. देखें 2 राजा 18; 19 और यशायाह 36; 37. [64]योएल 3:18 में भी कुछ इसी प्रकार का दृश्य मिलता है: "यहोवा के भवन में से एक सोता फूट निकलेगा, जिस से शित्तीम का नाम नाला सींचा जाएगा।" [65]योएल 3:18 और जकर्याह 14:8 में भी इसी प्रकार का विचार पाया जाता है: यरूशलेम की बरबादी तथा परमेश्वर के लोगों का बन्धुआई में जाने के बाद, परमेश्वर यरूशलेम को एक बार फिर आशीष देगा और परमेश्वर के घर से जीवन का जल बह निकलेगा (या नगर) जो धरती को फलदाई बना देगा। [66]यह "जीवन का वृक्ष" अदन की वाटिका में अकेला वृक्ष नहीं था लेकिन यह मूल वृक्ष से भी हटकर नहीं था क्योंकि यह परमेश्वर का प्रतीक था जो जीवन तथा स्वास्थ्य का मूल है। वह उनके जीवन की आयु को बढ़ा सकता था और प्रतिज्ञा की गई देश में शारीरिक एंव आत्मिक चंगाई भेजकर उन्हें उत्तम जीवन दे सकता था। [67]इस प्रकार का लेख pseudepigraphal (सुडेपीग्राफिकल) लेख *द टेस्टामेंट आफ द ट्वेल्व पेट्रीआर्क* में देखा जा सकता है। एक भाग में एक ऐसे समय का अंदेशा दिखाई देता है "जब परमेश्वर के ज्ञान को धरती पर समुद्र के जल के समान उण्डेला जाएगा" और तब कोई राजा या याजक "स्वर्ग का द्वार खोलेगा।" वह उस "तलवार को हटा देगा जिसने आदम के समय से ही खतरा खड़ा कर रखा है" और "वह संतों को जीवन के वृक्ष में से खाने देगा" (*द टेस्टामेंट आफ लेवाई* 18.5, 10)। [68]इस पर्व के दौरान, यहूदी लोग जिन रीति रिवाजों को मानते थे वे बाबुल की तालमूड *सुक्का* 48a-48b और मिस्ना *सुक्का* 3.8-4.9 में लिखा गया है। परमेश्वर के पर्व से संबंधित आज्ञा लैव्यव्यवस्था 23:34-43 में लिखी गई है। यह उस समय का स्मरण दिलाता है जब परमेश्वर ने "इस्राएलियों को मिस्र देश से निकाल कर लाया था तब उसने उनको झोंपड़ियों में टिकाया था" (लैव्यव्यवस्था 23:43)।